ओ३म्

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

वर्ष 8 अंक 17 | 2 से 8 मई, 2013 | दयानन्दाब्द 190 | सृष्टि सम्वत् 1960853114 | सम्वत् 2070 | वै. कृ.-07

शुल्क :- एक प्रति 2 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

माँसाहार के लिए पशु पक्षियों की निर्मम हत्या के विरूद्ध महर्षि दयानन्द की मार्मिक अपील

मांसाहारियों! तुम लोग जब कुछ काल के पश्चात् पशु न मिलेंगे, तब मनुष्यों का मांस भी छोड़ोगे वा नहीं? हे परमेश्वर! तू क्यों इन पशुओं पर, जो कि बिना अपराध मारे जाते हैं, दया नहीं करता है? क्या उन पर तेरी प्रीति नहीं है? क्या उनके लिये तेरी न्याय सभा बंद हो गई है? क्यों उनकी पीड़ा छुड़ाने पर ध्यान नहीं देता और उनकी पुकार नहीं सुनता? क्यों इन मांसाहारियों के आत्माओं में दया प्रकाश कर निष्ठुरता, कठोरता, स्वार्थपन और मूर्खता आदि दोषों को दूर नहीं करता? जिससे ये इन बुरे कर्मों से बचें। (महर्षि दयानन्द सरस्वती)

वे धर्मात्मा विद्वान लोग धन्य हैं, जो ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव, अभिप्राय, सृष्टि क्रम, प्रत्यक्षादि प्रमाण और आप्तों के आचार से अविरूद्ध चल के सब संसार को सुख पहुँचाते हैं और शोक है उन पर जो कि इनसे विरूद्ध स्वार्थी दयाहीन होकर जगत् में हानि करने के लिए वर्तमान है। पूजनीय जन वे हैं जो अपनी हानि होती हो तो भी सबके हित के करने में अपना तन, मन, धन लगाते हैं और तिरस्करणीय वे हैं जो अपने ही लाभ में संतुष्ट रहकर सबके सुखों का नाश करते हैं।

ऐसा सृष्टि में कौन मनुष्य होगा जो सुख और दुःख को स्वयं न मानता हो?क्या ऐसा कोई भी मनुष्य है कि जिसके गले को काटे वा रक्षा करे, वह दुःख और सुख का अनुभव न करे?जब सबको लाभ और सुख ही में प्रसन्नता है, तो बिना अपराध के किसी प्राणी का प्राण वियोग करके अपना पोषण करना यह सत्पुरुषों के सामने निन्दित कर्म क्यों न होवे?सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर इस सृष्टि में मनुष्यों के आत्माओं में अपनी दया और न्याय को प्रकाशित करे कि जिससे ये सब दया और न्यायमुक्त होकर सर्वदा सर्वोपकारक काम करें और स्वार्थपन से पक्षपातयुक्त होकर कृपापात्र गाय आदि पशुओं का विनाश न करें कि जिससे दुग्ध आदि पदार्थों और खेती आदि क्रियाओं की सिद्धि से युक्त होकर सब मनुष्य आनन्द में रहें।

इस ग्रन्थ में जो कुछ अधिक, न्यून वा अयुक्त लेख हुआ हो, उसको बुद्धिमान लोग इस ग्रन्थ के तात्पर्य के अनुकूल कर लेवें। धार्मिक विद्वानों की यही योग्यता है कि वक्ता के वचन और ग्रन्थकर्ता के अभिप्राय के अनुसार ही समझ लेते हैं। यह ग्रन्थ इसी अभिप्राय से रचा गया है कि जिससे गो आदि पशु जहाँ तक सामर्थ्य हो बचाये जावें और उनके बचाने से दूध, घी और खेती के बढ़ने से सबको सुख बढ़ता रहे। परमात्मा कृपा करे कि यह अभीष्ट शीघ्र सिद्ध हो।

इस ग्रन्थ में तीन प्रकरण हैं – एक समीक्षा, दूसरा नियम और तीसरा उपनियम। इनको ध्यान दें पक्षपात छोड़ विचार के राजा और प्रजा यथावत् उपयोग में लावें कि जिससे दोनों के लिए सुख बढ़ता ही रहे।

सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर ने इस सृष्टि में जो–जो पदार्थ बनाये हैं वे निष्प्रयोजन नहीं, किन्तु एक–एक वस्तु अनेक–अनेक प्रयोजन के लिए रची है। इसलिए उनसे भी वे प्रयोजन लेना न्याय अन्यथा अन्याय है। देखिये! जिस लिए यह नेत्र बनाया है इससे वही कार्य लेना सब को उचित होता है, न कि उससे पूर्ण प्रयोजन न लेकर बीच ही में वह नष्ट कर दिया जावे। क्या जिन–जिन प्रयोजनों के लिए परमात्मा ने जो–जो पदार्थ बनाये हैं, उन–उन से वे–वे प्रयोजन न लेकर उनको प्रथम ही विनष्ट कर देना सत्पुरुषों के विचार में बुरा कर्म नहीं है?पक्षपात छोड़कर देखिये, गाय आदि पशु और कृषि आदि कर्मों से सब संसार को असंख्य सुख होते हैं वा नहीं?जैसे दो और दो चार, वैसे ही सत्य विद्या से जो–जो विषय जाने जाते हैं वे अन्यथा कभी नहीं हो सकते।

जो एक गाय न्यून से न्यून दो सेर दूध देती हो, और दूसरी बीस सेर तो प्रत्येक गाय के ग्यारह सेर दूध होने में कोई शंका नहीं है। इस हिसाब से एक मास में सवा आठ मन दूध होता है। एक गाय कम से कम 6 महीने और दूसरी अधिक से अधिक 18 महीने तक दूध देती है, तो दोनों का मध्य भाग प्रत्येक गाय के दूध देने में बारह महीने होते हैं। इस हिसाब से 12 महीनों का दूध निन्नयानबे मन होता है। इतने दूध को औटाकर प्रति सेर में एक छटांक चावल और डेढ़ छटांक चीनी डालकर खीर बना खावें, तो प्रत्येक पुरुष के लिए दो सेर दूध की खीर पुष्कल होती है। क्योंकि यह भी एक मध्यभाग की गिनती है। अर्थात् कोई दो सेर दूध की खीर से अधिक खा गया और कोई न्यून। इस हिसाब से एक प्रसूता गाय के दूध से 1980 (एक हजार नव सौ, अस्सी) मनुष्य एक बार तृप्त होते हैं। गाय न्यून से न्यून 8 और अधिक से अधिक 18 बार ब्याती है, इसका मध्य भाग तेरह बार आया। तो 25740 मनुष्य एक गाय के जन्म भर के दूधमात्र से एक बार तृप्त हो सकते हैं।

इस गाय की एक पीढ़ी में छः बछिया और सात बछड़े हुए। इनमें से एक ही मृत्यु रोगादि से होना सम्भव है, तो भी बारह रहे। उन छः बछियाओं के दूधमात्र से उक्त प्रकार 154440 मनुष्यों का पालन हो सकता है। अब रहे छः बैल, उनमें एक जोड़ी से दोनों साख में 200 मन अन्न उत्पन्न हो सकता है। इस प्रकार तीन जोड़ी 600 मन अन्न उत्पन्न कर सकती हैं और उनके कार्य का मध्य भाग आठ वर्ष है। इस हिसाब से 4800 मन अन्न से प्रत्येक मनुष्य का तीन पाव अन्न भोजन में गिनें तो 256000 मनुष्यों का एक बार भोजन होता है। दूध और अन्न को मिलाकर देखने से निश्चय है कि 410440 मनुष्यों का पालन एक बार के भोजन से होता है। अब छः गाय की पीढ़ी परपीढ़ियों का हिसाब लगाकर देखा जावे तो असंख्य मनुष्यों का पालन हो सकता है और इसके मांस से अनुमान है कि केवल अस्सी मांसाहारी मनुष्य एक बार तृप्त हो सकते हैं। देखो! तुच्छ लाभ के लिए लाखों प्राणियों को मार असंख्य मनुष्यों की हानि करना महापाप क्यों नहीं?

यद्यपि गाय के दूध से भैंस का दूध अधिक और बैलों से भैंसा कुछ न्यून लाभ पहुँचाता है, तथापि जितना गाय के दूध और बैलों के उपयोग से मनुष्यों को सुखों का लाभ होता है। उतना भैंसियों के दूध और भैंसों से नहीं। क्योंकि जितने आरोग्यकारक और बुद्धिवर्द्धक आदि गुण गाय के दूध और बैलों में होते हैं उतने भैंस के दूध और भैंसे आदि में नहीं हो सकते। इसलिए आर्यों ने गाय सर्वोत्तम मानी है। और ऊँटनी का दूध गाय और भैंस के दूध से भी अधिक होता है, तो भी इनका दूध गाय के सदृश नहीं। ऊँट और ऊँटनी के गुण भार उठाकर शीघ्र पहुँचाने के लिए प्रशंसनीय है।

अब एक बकरी कम से कम एक और अधिक से अधिक पांच सेर दूध देती है, इसका मध्य भाग प्रत्येक बकरी से तीन सेर दूध होता है और न्यून से न्यून तीन महीने और अधिक से अधिक पांच महीने तक दूध देती है, तो प्रत्येक बकरी के दूध देने में मध्य भाग चार महीने हुए। वह एक मास में दो सवा दो मन और चार मास में 9 मन होता है। पूर्वोक्त प्रकारानुसार इस दूध में 180 मनुष्यों की तृप्ति होती है और एक बकरी एक वर्ष में दो बार ब्याती है। इस हिसाब से एक वर्ष में एक बकरी के दूध के एक बार भोजन से 360 मनुष्यों की तृप्ति होती है। कोई बकरी न्यून से न्यून चार वर्ष और कोई अधिक से अधिक 8 वर्ष तक ब्याती है, इसका मध्य भाग 6 वर्ष हुआ, तो जन्म भर के दूध से 2160 मनुष्यों का एक बार के भोजन से पालन होता है।

अब उसके बच्चा–बच्ची मध्य भाग से 24 हुए, क्योंकि कोई न्यून से न्यून एक और कोई अधिक से अधिक तीन बच्चों से ब्याती है। उनमें से दो का अल्पमृत्यु समझो, रहे 22। उनमें से 12 बकरियों के दूध से 25920 मनुष्यों का एक दिन पालन होता है। उसकी पीढ़ी परपीढ़ी के हिसाब लगाने से असंख्य मनुष्यों का पालन हो सकता है और बकरे भी बोझ उठाने आदि प्रयोजनों में आते हैं, और बकरा–बकरी और भेड़ा–भेड़ी के उनके वस्त्रों से मनुष्यों को बड़े–बड़े सुख लाभ होते हैं। यद्यपि भेड़ी का दूध बकरी के दूध से कुछ कम

शेष पृष्ठ 3 पर

सम्पादक
प्रो. कैलाशनाथ सिंह

वैदिक ''कामदेव'' और आधुनिक ''काम राक्षस''

– प्रो. रमेश चन्द्र शास्त्री

संसार परिवर्तनशील है ''संसरति हति संसारः'' इसमें निरन्तर परिवर्तन होते रहते हैं। कभी उत्तम प्रवाह चलता है तो कभी अधम। पहले भी ये दैवी सम्पत् व आसुरी सम्पत् नाम से प्रसिद्ध थे। गीता में ''दैवी सम्पद्विमोक्षाय निबन्धायां आसुरी मतः'' कहा है। दैवी सम्पत् मोक्ष कारक है व आसुरी सम्पत् बन्धन में डालता है। यह दैवी संस्कृति व राक्षसी संस्कृति के नाम से भी प्रसिद्ध है।

मनुष्य के करने योग्य चार पुरुषार्थ है, धर्म अर्थ, काम, मोक्ष। ये चार जिसने प्राप्त कर लिये वह महापुरुष बन गया। ऐसे महान् व्यक्ति दो प्रकार के होते हैं, एक वे जो धर्म के बाद सीधे मोक्ष को प्राप्त करते हैं और दूसरे वे जो क्रमशः धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को प्राप्त करते हैं। योग दर्शन में कहा है पुरुषार्थ शून्यानां गुणानां प्रतिप्रसवः कैवल्यम्, ... पुरुषार्थ के द्वारा गुणों को अपने–अपने कारण में लीन करते हुए कैवल्य अवस्था प्राप्त होती है। इसी को सांख्य में ''अथ त्रिविध दुख अत्यन्तनिवृत्तिरत्यन्त पुरुषार्थः'' कहा है। महर्षि दयानन्द ने संन्ध्या के अन्दर हे ईश्वर! दयानिधे! भवत् कृपया अनेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणाम् सद्यः सिद्धिः भवेन्नः मन्त्र में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की शीघ्र प्राप्ति हो ऐसी प्रार्थना परमात्मा से की है। कुछ भक्तजन संन्ध्या के इस मंत्र में ''काम'' की प्रार्थना सुनकर अनेक प्रकार के प्रश्न करने लगते हैं, अतः हम यहाँ इन चार में से केवल काम के बारे में कुछ कहना चाहेंगे। काम व्यापक अर्थ वाला है। हमसे भूल तब होती है जब हम काम का संकुचित अर्थ ''विषय वासना'' सम्बन्धी काम लेते हैं। मनु ने लिखा अकामस्य क्रिया काचित् दृश्यते नहि कर्हिचित्, यत् यत् हि कुरुते किंचित् तत् तत् कामस्य चेष्टितम्। संसार में काम (कामना) रहित व्यक्ति की कोई क्रिया दिखाई नहीं देती, संसार में जो कुछ भी दिखाई दे रहा है वह काम द्वारा प्रेरित है। अमर कोश में काम के 21 पर्याय हैं, उनमें ब्रह्मभूः, आत्मभू, विश्वकेतु और मनोज भी हैं। जब हम इनके अर्थों पर विचार करते हैं तब हमको काम का व्यापक अर्थ दिखाई देता है। पाठक यह ध्यान रखें कि भारतीय संस्कृति व भारतीय साहित्य में काम को काम देव भी कहा है और काम को देव कहना इस बात का प्रतीक है कि काम भी बहुत अच्छी चीज है, तभी तो इसे देव कहा है। यह ब्रह्मभू है, ब्रह्मा (परमात्मा) से पैदा हुआ है। अगर काम बुरा होता तो परमात्मा उसको पैदा ही क्यों करता। प्रायः प्रश्न उठाया जाता है कि प्राणियों के कामी होने का दोष प्राणियों पर नहीं परमात्मा पर आना चाहिए?कठोपनिषद् में भी पराचिं खानि व्यतृणात् स्वयंभूः तस्मात् पराङ् पश्यति नान्तरात्नम्। कश्चित् धीरः प्रत्यक् आत्मानमैक्षत् आवृत्तचक्षुः अमृतत्वमिच्छन्।। परमात्मा ने इन्द्रियों की बहिर्मुखी प्रवृत्ति बनाई है, इसीलिए इन्द्रियाँ वाह्य विषयों की तरफ देखती हैं। आत्मा की कामना वाला कोई धीर पुरुष ही अन्तर्मुखी होकर आत्मदर्शन करता है। ''वासनायाः अनादित्वात्'' सांख्य सूत्र के अनुसार वासनाये अनादि हैं इस अनादि चक्र के कारण, कर्मफल प्रदान करने के लिए, विषयों की तरफ वाह्य वृत्ति वाली इन्द्रियों के स्वामी मन आदि की बहिर्मुखी प्रवृत्ति परमात्मा ने बनाई।

इसीलिए ब्रह्म द्वारा उत्पन्न होने के कारण ही काम को ब्रह्मभूः कहा गया है। परमात्मा ने इस सृष्टि में जो कुछ भी बनाया है वह सब अच्छा है अच्छे उद्देश्यों के लिये है। हम उसका दुरुपयोग कर उसे बुरा बना देते हैं। जैसे आधुनिक युग में काम का दुरुपयोग हो रहा है और यह बदनाम हो रहा है। अगर काम बुरा होता तो पौरूषहीन (वीर्यहीन) व्यक्ति (नपुंसक) अच्छे माने जाते और पौरुष शक्ति सम्पन्न व्यक्ति अनादर के पात्र होते। एक उदाहरण से इसको स्पष्ट करते हैं – किसी की कन्या विवाह योग्य हो, उसके लिये उसके पिता को, उसका परिचित, ऐसा वर बताये जिसके अन्दर पौरुष न हो और यह भी साथ में कहे कि देखो जिस काम की सभी सज्जन व शास्त्र निन्दा करते हैं वह काम हीन यह लड़का है अतः सदाचार का पालन स्वतः ही हो जायेगा, तो कन्या का कोई भी पिता उस नपुंसक से विवाह के लिए राजी नहीं होगा बल्कि परिचित मित्र भी निन्दा का पात्र होगा। कारण, विवाह का उद्देश्य उत्तम सन्तान की प्राप्ति है भोग विलास नहीं। यह सन्तान काम शक्ति के बिना प्राप्त नहीं हो सकती। इसीलिए यह मदनोत्सव (विवाह संस्कार) बड़े धूमधाम से किया जाता है। 16 संस्कारों में सबसे अधिक चहल–पहल से किया जाता है। जबकि सभी यह जानते हैं कि विवाह के बाद सेक्स सम्बन्ध होगा, यह घर तथा बाहर वाले सभी जानते हैं फिर भी सब आते हैं, बधाईयाँ देते हैं, शुभकामनाये प्रकट करते हैं। अगर पति–पत्नी का यह सम्बन्ध (जो काम बिना सम्भव नहीं है) अपवित्र होता तो बधाईयाँ नहीं मिलतीं। इससे स्पष्ट है कि यह सम्बन्ध, अच्छा माना जाता है क्योंकि यह ब्रह्मभूः है। हमारे यहाँ आठ प्रकार के विवाहों में ब्राह्म, देव, आर्ष और प्राजापत्य ये चार प्रकार के विवाह इसीलिए उत्तम माने गये हैं क्योंकि ये कर्त्तव्य प्रधान विवाह हैं और शेष चार आसुर, गान्धर्व, राक्षस और पैशाच विवाहों को प्राचीन काल में इसीलिए सम्मान नहीं मिला क्योंकि ये सैक्स (काम) प्रधान हैं। पहले चार विवाहों से आनन्द प्राप्त होता है शेष चार से क्लेश आदि प्राप्त होते हैं। चाकू आदि से ऑपरेशन करने वाला डॉक्टर अच्छा और चलाने वाला गुण्डा कहलाता है, क्योंकि डॉक्टर का लक्ष्य उत्तम है गुण्डे का नहीं। आठों प्रकार के विवाहों में सेक्स सम्बन्ध होते हैं पर पहले चार उत्तम इसीलिए माने गये हैं कि वे कर्त्तव्य को पूरा करने के होते हैं और शेष चार केवल सेक्स भावना को पूरा करने के लिए होते हैं अतः त्याज्य हैं। जहाँ ब्रह्म भूः मान कर काम का (सेक्स का) प्रयोग किया जाता है वहाँ यह कामदेव कहलाता है और जहाँ केवल काम वासना की पूर्ति के लिए, अन्याय पूर्वक किया जाता है वहाँ काम राक्षस कहाता है। हम ब्रह्म की धरोहर समझकर इसका प्रयोग करें। जैसे बैंक के कैशियर दूसरों के पैसों का करते हैं।

आत्मभूः – इसी पवित्र काम भाव को आत्म भूः कहते हैं जो इस पर नियन्त्रण रखकर उचित समय पर शास्त्र मर्यादा के अनुसार इसका प्रयोग करते हैं, उनका ''काम'' आत्म भू कहलाता है। इसको पैदा करने वाले इसके स्वामी वे स्वयं हैं। स्वामी आत्मा के अधीन रहने वाला काम आत्म भू है जो सांसारिक आकर्षण तथा अनियन्त्रित काम से उत्पन्न नहीं है। शास्त्रकारों ने उपेस्थेन्द्रिय का विषय आनन्द माना है, इसमें किसी का मतभेद नहीं है। यही इसकी पवित्रता का प्रतीक है।

संसार के प्रत्येक प्राणी पर काम समान रूप से अपना प्रभाव रखता है, यह जितना प्रभाव अशिक्षितों पर रखता है उतना ही शिक्षितों पर भी रखता है। विश्व में इसकी पताका फहरा रही है। इसीलिए वह विश्वकेतु है।

हम मन पर नियन्त्रण रखें तो काम पर नियन्त्रण स्वतः हो जायेगा क्योंकि यह मनोज है, मन से पैदा होता है। पहले काम का प्रभाव मन पर होता है, बाद में शरीर पर। सत्संग, स्वाध्याय आदि से मन पर उसका नियन्त्रण होता है, दूषित वातावरण का प्रभाव मन पर होता है और यह काम राक्षसी रूप धारण कर लेता है।

यह काम ही (काम राक्षस नहीं) विवाह के बाद दो अपरिचितों को एकात्म कर देता है, पति पत्नी के दो शरीर हैं पर आत्मा एक, मन एक, वाणी एक हो जाती है। समंजन्तु विश्वेदवाः समापो हृदयानि नौ संमातरिश्वाः समधाता समुदेष्ट्रि दधातु नौ गृह्यसूत्र के अनुसार ऐसी प्रतिज्ञा विवाह संस्कार में पति–पत्नी करते हैं। यहाँ कामदेव धर्मपति व धर्मपत्नी बनाता है केवल पति–पत्नी नहीं। पति पत्नी एक दूसरे में अपने रूप को देखते हैं, परस्पर कुछ नहीं छुपायेंगे ऐसी प्रतिज्ञा करते हैं। एक दूसरे के लिए मर मिटने की प्रतिज्ञा करते हैं। महर्षि दयानन्द के अनुसार पति–पत्नी एक दूसरे के हाथ बिक चुके हैं, उन दोनों के मन शरीरादि पर एक दूसरे का अधिकार है। वृद्धावस्था में या स्वार्थ के कारण जहाँ पति पत्नी एक दूसरे का साथ छोड़ देते हैं वहाँ काम राक्षस का प्रभाव होता है और जहाँ हर स्थिति में एक दूसरे के साथ देते हैं वहाँ कामदेव का प्रभाव है जैसा कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने सीता के लिए व सीता ने राम के लिए किया अन्यथा वे यह भी सोच सकते थे कि अब क्या उम्मीद है कि हम दोनों एक दूसरे से मिल सकेंगे?जीवित बचेंगे या नहीं?दूसरा विवाह कर लेंगे, क्यों अपनी जान को खतरे में डालूँ। यह देवत्व भाव वाला कामदेव ही था जिसने यह सब कर दिखाया। एक इतिहास की रचना कर डाली। मर्यादा पुरुषोत्तम राम में यह कामदेव के रूप में रहता था और राक्षस राज रावण में काम राक्षस के रूप में विद्यमान था यही दोनों के व्यक्तित्व का अन्तर है।

काम का अर्थ कर्त्तव्य भावना है। कामदेव प्रेम का देवता है, स्वार्थ का नहीं। यह प्रेम किसी विशेष अवस्था में विशेष लक्ष्य को लेकर पत्नी में और पत्नी का पति में होता है तब काम कहलाता है। यही प्रेम जब अप्रिय पदार्थ को दूर रखने के लिए होता है और वह अप्रिय पदार्थ बार–बार हमारे पास आये तक क्रोध कहलाता है, क्रोध में परिवर्तित हो जाता है। यही प्रेम जब अनावश्यक रूप से धन में होता है तब लोभ कहलाता है। यही प्रेम जब सन्तान में होता है तब मोह कहलाता है। यही प्रेम जब आवश्यकता से अधिक अपने आप में होता है तब अहंकार कहलाता है। यही प्रेम जब अपने से बड़े पूज्य गुरुजनों में होता है तब श्रद्धा कहलाता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार ये जीवन के लिए आवश्यक हैं बशर्ते कि इनका उचित समय में उचित मात्रा में, उचित रूप से प्रयोग किया जाये अन्यथा ये हानिकारक हो जाते हैं। जैसे चिड़ियाघर का सौन्दर्य और आकर्षण चिड़ियों से कम खूंखार शेर आदि से ज्यादा है, पर कब तक जब तक कि ये खूंखार प्राणी एक सीमा में पिजड़े में बन्द हो। अगर दर्शकों को यह पता चल जाये कि चिड़ियाघर में शेर पिजंड़े से बाहर घूम रहा है तो कोई भी देखने नहीं जाता। इसी तरह काम आदि जब तक नियन्त्रण में है तभी तक मनुष्य दर्शनीय होता है अन्यथा नहीं। अतः काम आदि पर नियन्त्रण करो, जीवन सफल करो और जीवन भर आनन्द की प्राप्ति करो।

कामसूत्र में वात्स्यायन मुनि ने इसी काम का वर्णन किया और यह बताया कि काम को काम देव कैसे बनाया जा सकता है उसका सदुपयोग कैसे किया जाये, आपद्धर्म में क्या किया जाये, आदि–आदि। इसीलिए वे वात्स्यायन मुनि कहलाये, 2.2.5.6 तैत्तिरीय उपनिषद् में कहा है – कामो हि दाता कामः प्रतिग्रहीता च तथा नैव कामस्यान्तोऽस्ति, न समुद्रस्य समुद्र की तरह यह अथाह है। नीतिकार ने कहा न जातु कामः कामानां उपभोग्येन शाम्यति, हविषा कृष्ण वर्त्मेव भूयोरेवाभिवर्धते अनावश्यक, अधिक उपयोग से यह शान्त नहीं होता, यह समझते हैं कि काम का भरपूर भोग करने से यह शान्त हो जायेगा वे गलत समझते हैं?अति हर बात की बुरी होती है आचारः परमो धर्मः होता है पर जब आचार में भी अति लग जाता है तब परम धर्म नहीं रहता तब यही आचार अत्याचार बन जाता है।

अतः इस ब्रह्मभूः को राक्षसभू, आत्मभू को अनात्मभू विश्वकेतु को विश्वकृन्दक और कामदेव को कामराक्षस न बनाओ, इसी में कल्याण है।

– 1816/28, फरीदाबाद, हरियाणा–121008,
दूरभाष :–095129–4049489

आर्ष गुरुकुल नोएडा, बी.–69, सैक्टर–33, नोएडा

प्रवेश सूचना : सत्र 2013

आर्ष गुरुकुल नोएडा, आर्य समाज नोएडा का प्रकल्प है जिसकी स्थापना 1994 में अपने विद्वानों, संन्यासियों की उपस्थिति में हुई। व्यक्ति के विकास के लिए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली अत्यन्त आवश्यक है। आर्ष गुरुकुल नोएडा में प्राचीन तथा अर्वाचीन शिक्षा का अनुपम सामन्जस्य देखने को मिलता है। संस्था द्वारा शिक्षा के साथ–साथ छात्रों के स्वास्थ तथा चरित्र निर्माण की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। गुरुकुल कांगड़ी से सम्बन्धित आर्ष गुरुकुल नोएडा में प्रवेश सीमित है। इच्छुक विद्यार्थी शीघ्र सम्पर्क करें। प्रवेश परीक्षा एवं साक्षात्कार उत्तीर्ण को प्राथमिकता के आधार पर प्रवेश।

छात्रों का छात्रावास में रहना अनिवार्य। संध्या, हवन, योग, प्राणायाम, नैतिक शिक्षा व नियमित दिनचर्या कम्प्यूटर शिक्षा एवं गोदुग्ध की व्यवस्था, स्वच्छ वातावरण।

पांचवीं कक्षा पास को प्रवेश, शिक्षा शास्त्री तक, शिक्षा निःशुल्क केवल भोजन शुल्क देय।

– सम्पर्क सूत्र : 0120–2505731, 9871798221

शिक्षा और संस्कार के सरोकार

– हरिकृष्ण शर्मा, प्राचार्य

जिस तरह साहित्य समाज का दर्पण है उसी प्रकार शिक्षा के आइने में शिक्षार्थियों के चेहरों की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। शिक्षा के सांचे में ढल कर शिक्षार्थियों के व्यवहार में परिष्कार, व्यक्तित्व में निखार और जीवन में सुसंस्कार की अपेक्षा की जाती है। शिक्षा, किसी देश के भावी विकास एवं उत्कर्ष का ऐसा उपकरण है जिसका नियोजन और संगठन देश की परिस्थितियों, आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के अनुसार किया जाता है। वर्तमान शिक्षा द्वारा शिक्षित युवा पीढ़ी पर संस्कार की दृष्टि डालने से पता चलता है कि यह उनकी वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम नहीं है। भावी संभावनाओं के संदर्भ में उनके नारद मुखी चेहरे कुछ अटपटे से लगते हैं। भगवान जाने इस आइने को क्या हो गया है।

विदेशी लोग भारत से काफी धन और माल लूट कर ले गये। इस लूटपाट में हमारी श्रमनिष्ठा संस्कृति भी पाश्चात्य देशों की पांती में आ गई। श्रम–शिरोमणि जापान की बात छोड़िये पर सुना है इंग्लैण्ड और अमेरिका के लोग भी अब शारीरिक श्रम को गले लगा रहे हैं। वहाँ के एक प्रोफेसर दिन में कॉलेज में पढ़ाते हैं और शाम को एक नाई की दुकान पर बाल काटने का काम करने में नहीं लजाते। अमेरिका के राष्ट्रपति और उच्चाधिकारियों ने अपने विद्यार्थी जीवन में अखबार और मूंगफली बेचने या प्रतीक्षा सेवक का काम भी किया था। इधर हमारा अभिमन्यु धीरे–धीरे श्रम से टूटता जा रहा है। अपनी दो किलो की अटेची या बैडिंग भी कुली के ही मत्थे मंढ़ने में गौरव अनुभव करता है। वाहन के बिना आधा कोस की दूरी तय करने में मील के पत्थर सा खड़ रह जाता है। सुना है एक ग्रामीण युवक जब मिडिल पास करके उच्च माध्यमिक विद्यालयी और महाविद्यालयी शिक्षा के लिए गाँव के बस अड्डे पर आया तो बिस्तर और पीपा अपने सर पर रख लाया, पिता उसके पीछे–पीछे उसे छोड़ने आया था, किन्तु जब बी. ए. पास करके आया तो पिताश्री के सर पर हॉल्डौल था और अपना ब्रीफकेस लिए पिता के पीछे–पीछे मानों उन्हें घर छोड़ने आ रहा था।

आप चाहे इसे वैज्ञानिक युग की देन कहें पर हमारी समझ में तो पढ़ने लिखने के बाद शारीरिक श्रम के प्रति हीन भावना अनैतिक शिक्षा का पर्याय लगता है। हमारे राष्ट्रपिता ने तो श्रम की महत्ता पर बहुत कुछ कहा है पर हमारी मनोवृत्ति यह है कि हमें अपने हाथ से पानी भर कर पीना भी शान के खिलाफ सा लगता है। हमारी प्राचीन शिक्षा तो ज्ञान के साथ कर्म से जुड़ी हुई थी पर आधुनिक शिक्षा में न जाने यह कड़ी कहाँ लुप्त हो गई?पुस्तकीय ज्ञान के ताने–बाने में श्रम कार्य के प्रति अनुराग जगाने वाले वे पाठ, पाठ्यक्रम की बौद्धिकता में न जाने कहाँ खो गये?

वर्तमान शिक्षा में शिक्षित युवक–युवतियों में साहबी मनोवृत्ति का विकास भी कोई कम नहीं हो रहा। सादा जीवन और सद् विचार के दकियानूसी खयालों की खामख्वाही ये सिद्ध कर चुके हैं। आधुनिक फैशन परस्ती और ठाठ बाट इनके बालसखा हैं। नवाचारिता में तल्लीन इन लोगों ने सूती वस्त्र झटक कर टेरेलीन को अंग लगाया है। श्रेष्ठ वस्तुओं के ये उपभोक्ता हैं। इनकी माँग और पूर्ति के सवाल हल करते अभिभावकों का कलेजा मुँह को आता है। मैट्रिक या ग्रेजुएट बन कर शैक्षिक कारखानों से ये निकलते हैं तो इनकी आकांक्षाएँ सुरसा बदनी होती हैं। रहने को पक्का मकान कुछ फर्नीचर और साज–सज्जा का सामान, अच्छा भोजन, दांत साफ करने को दातौन नहीं पेस्ट, चढ़ने को वाहन, सुनने को ट्रांजिस्टर और देखने को सिनेमा इन्हें चाहिए। अगर वश लगे तो अन्त में दहेज समेट लाने वाली पत्नी भी अंगीकार कर सकते हैं। गनीमत है कि बिना कमाये इनकी यह साहबी संयुक्त परिवारों में निभ रही है वरना अकेले सरकारी कर्मचारी का तो कचूमर निकल जाता या भट्टी बुझ जाती।

पुराने जमाने की यह खूबी थी कि नाई का बेटा बाल काटना, दर्जी का बेटा कपड़े सीना, मोची का बेटा जूते बनाना और बढ़ई का लड़का लकड़ी का काम आसानी से पैतृक व्यवसाय के रूप में बचपन से ही सीख लेता था। पर आज लल्लू लाल का हाल बेहाल है। स्थानीय स्रोतों से कटी, व्यावहारिकता और क्रियात्मकता से हटी थोड़ी शिक्षा पाते ही शिक्षार्थी समझने लगता है कि अब उसे सरकारी नौकरी का स्वाद लेना है। गाँवों के विद्यार्थी, मिस्त्री और किसानों के बेटे विद्यालयी शिक्षा के बाद या तो महाविद्यालय के प्रवेश द्वार पर दस्तक देते हैं या नगरों की देहरी पर धमक कर रोजगार दफ्तर के चक्कर काटते हैं। इनका एक ही युग धर्म है – जमीन पर नहीं, कुर्सी पर बैठना है। इस व्यामोह की भूल भुलैया में वे घर के न घाट के, कहीं के नहीं रहते। अफसोस उस वक्त होता है जब हम देखते हैं कि उन्हें सरकारी नौकरियों में बैंक के चपरासी से अधिक वेतन मिलने की संभावना नहीं होती। उधर अच्छे मिस्त्रियों और किसानों के अभाव में ट्रैक्टरों की मरम्मत नहीं हो पाती और खेती का धन्धा सोना नहीं उगलता। प्रशस्त मानवीय स्रोतों के अभाव में या कि अच्छे कृषक पशु पालक सिंचाई विशेषज्ञ और कृषि इंजीनियरों के अकाल में कोई कार्योन्मुखी शिक्षा ही इस नासूर को दूर कर सकती है।

शिक्षा को काम से जोड़ने पर गाँधी जी का बड़ा आग्रह था। वे पाठ्यक्रम को इस प्रकार गठित करने के पक्ष में थे कि प्रारम्भ से ही विद्यार्थी कोई न कोई काम सीख ले जिससे वह अपनी रोजी–रोटी निकाल सके। इस तथ्य को समय–समय पर विभिन्न आयोगों और समितियों ने भी स्वीकारा और शिक्षा के साथ उत्पादकता को जोड़ने की बात कही। पर अभी तक समाजोपयोगी उत्पादक कार्य शिक्षा के सांचे में फिट नहीं हो पाया है। हमारा वर्तमान पाठ्यक्रम अब भी सैद्धान्तिक और ज्ञान लक्ष्योन्मुखी है। हमारा मूल्यांकन उसमें 33 प्रतिशत सफलता पर्याप्त मानता है। इससे डिग्री धारियों की फौज की फौज निकल रही है।

आये दिन पेपरों का बहिष्कार, परीक्षा में नकल, उपस्थिति की नाबन्दिश और बेरोजगारी भत्ते की माँग हमारे शैक्षिक उपक्रम की प्रामाणिकता सिद्ध कर रहे हैं। स्विटजरलैण्ड में फसली अवकाश में विद्यार्थियों का सामुदायिक कृषि में सक्रिय भाग लेने का प्रावधान है पर हमारे पाइयक्रम में परिवर्तन पर लगा प्रश्नचिन्ह विद्यार्थियों की जीवंत समस्याओं का समाधन नहीं कर पा रहा है। 10 प्रतिशत उपलब्धि स्तर पर लाभान्वित छात्रों के लिए बना यह पाठ्यक्रम और लड़खड़ाती परीक्षा पद्धति कामकाजी शिक्षा के लिए स्पष्ट आह्वान है। अन्यथा गरीबी भुखमरी शोषण, असंतोष और चीत्कार के ये नजारे अनबूझ पहेली नहीं रहेंगे।

शिक्षा को एक व्यापार या विनियोग के नाम से भी अभिहित किया जाता है जिसमें सरकार के अलावा शिक्षार्थी के अभिभावक की भी पूंजी का निवेश होता है। पर इस पूंजी से लाभ देर सबेर किसी न किसी रूप में मिलता अवश्य है। अभी इस सौदे में मुनाफे के आसार कम नजर आते हैं। हर माता–पिता अपने बच्चों को इस आशा से विद्यालय भेजता है कि वे कुछ न कुछ अवश्य अच्छे बनेंगे पर कभी–कभी उनके ये स्वप्न भुंजे पापड़ से बिखर जाते हैं। विद्यालयों में विभिन्न विषयों की पाठ्य वस्तु की शिक्षा तो अवश्य दी जाती है पर इंसान बनाने की शिक्षा बेअसर और गूंगी बहरी सी लगती है। बालकों में अच्छे संस्कार, आदतें और सुनागरिकता के गुण कम ही देखने को मिलते हैं। विद्या ददाति विनयं की बात केवल भोर का तारा बन रही है। आचार्य देवो भव, मातृ देवो भव, पितृ देवो भव के सिद्धान्तों पर अब ग्रेशम का नियम लागू हो गया लगता है। इनके स्थान पर अब फिल्मी दुनियाँ और पश्चिमी सभ्यता के थानों की परतें खुलने लगी हैं जिससे पिता और पुत्र की विचारधारा पूरब पश्चिम हो गई है। विद्यालयों में छात्र असंतोष की बात शिक्षाशास्त्रियों के लिए आज तक अनबूझ पहेली बनी हुई है। गोष्ठियों में विचार होता है सुझाव मिलते हैं पर उस असंतोष का यही समाधान कब और कैसे होगा इसे शिक्षा ही बतायेगी।

शिक्षा के आइने में वर्तमान शिक्षार्थी का सामान्य चेहरा ऐसे दिशा एवं कर्म विहीन व्यक्ति का है जिसने शिक्षा के लिए शिक्षा पाई है और अपनी ज्ञान पोटली सिर धरे न अपना न अपने समाज का कुछ भला कर पाता है। 'योगः कर्मसुकौशलम' के स्वच्छ वस्त्र से इस आइने को रगड़ कर पोंछ लिया जाये तो शायद सुधड़ से चेहरे दिखाई दें जो अपनी और सामाजिक आवश्यकताओं के समय सापेक्ष्य सन्दर्भ में टकसाली सिक्के से खरे उतर सकें। कुछ प्रतिभाशाली चेहरों को चुनकर विशिष्ट शिखा अलंकरण से सुसज्जित किए जायें, जन–जीवन और राष्ट्रीय अपेक्षाओं से विच्छिन्न शिक्षा के अलग–थलग झरोखे से वर्तमान के दर्पण में झांकना, रुपहले चेहरों पर कागज का पैकिंग है। भविष्य का विद्यार्थी आप से पूछ सकता है – 'मुखड़ा क्या देखे दर्पण में?'' और कह सकता है अपने 'सर' को इतनी लिफ्ट नहीं देते कि वो हमारा कार्य चैक करें और होमवर्क चैक भी करें तो विज्ञापन वाले उस पैन से क्यों न करें जिससे प्रेम पत्र लिखे जाते हैं। और बस गुरु गुरु की गरिमा से गिरकर मात्र 'टीचर' रह गया।

पृष्ठ–1 का शेष

माँसाहार के लिए पशु पक्षियों की निर्मम हत्या के विरूद्ध...

होता है, तथापि बकरी के दूध से उसके दूध में बल और घृत अधिक होता है। इसी प्रकार अन्य दूध देने वाले पशुओं के दूध से भी अनेक प्रकार के सुख लाभ होते हैं।

जैसे ऊँट–ऊँटनी से लाभ होते हैं, वैसे ही घोड़ा–घोड़ी और हाथी आदि से अधिक कार्य सिद्ध होते हैं। इसी प्रकार सुअर, कुत्ता, मुर्गा–मुर्गी और मोर आदि पक्षियों से भी अनेक उपकार होते हैं। जो पुरुष हरिण और सिंह आदि पशु और मोर आदि पक्षियों से भी उपकार लेना चाहें तो ले सकते हैं। परन्तु सबका पालन उत्तरोत्तर समयानुकूल होवेगा। वर्तमान में परमोपकारक गौ की रक्षा में मुख्य तात्पर्य है। दो ही प्रकार से मनुष्य आदि की प्राण रक्षा, जीवन, सुख, विद्या, बल और पुरुषार्थ आदि की वृद्धि होती है – एक अन्नपान, दूसरा आच्छादान। इनमें से प्रथम के बिना मनुष्यादि का सर्वथा प्रलय और दूसरे के बिना अनेक प्रकार की पीड़ा होती है।

देखिए, जो पशु निःसार घास तृण पत्ते, फल–फूल आदि खावें और सार दूध आदि अमृतरूपी रत्न देवें, हल गाड़ी में चल के अनेक विध अन्न आदि उत्पन्न कर सबके बुद्धि बल पराक्रम को बढ़ा के निरोगता करें, पुत्र–पुत्री और मित्र आदि के समान पुरुषों के साथ विश्वास और प्रेम करें, जहाँ बांधें वहाँ बंधे रहें, जिधर चलावें उधर चलें, जहाँ से हटावें वहाँ से हट जावें, देखने और बुलाने पर समीप चले आवें जब कभी व्याघ्रादि पशु वा मारने वाले को देखें, अपनी रक्षा के लिए पालन करने वाले के समीप दौड़ आवें कि यह हमारी रक्षा करेगा।

जिनके मरे पर चमड़ा भी कंटक आदि से रक्षा करे, जंगल में चर के अपने बच्चे और स्वामी के लिए दूध देने को नियत स्थान पर नियत समय चले आवें, अपने स्वामी की रक्षा के लिए तन, मन लगावें। जिनका सर्वस्व राजा और प्रजा आदि मनुष्यों के सुख के लिए है, इत्यादि शुभ गुणयुक्त सुखकारक पशुओं के गले छुरों से काटकर जो (मनुष्य) अपना पेट भर सब संसार की हानि करते हैं, क्या संसार में उनसे भी अधिक कोई विश्वासघाती, अनुपकारी, दुःख देने वाले और पापी जन होंगे?

इसीलिए यजुर्वेद के प्रथम ही मन्त्र में परमात्मा की आज्ञा है कि – (अघ्न्या यजमानस्य पशून् पाहि) हे पुरुष! तू इन पशुओं को कभी मत मार और यजमान अर्थात् सबके सुख देने वाले जनों के सम्बन्धी पशुओं की रक्षा कर, जिनसे तेरी भी पूरी रक्षा होवे और इसीलिए ब्रह्म से लेके आज पर्यन्त आर्य लोग पशुओं की हिंसा में पाप और अधर्म समझते थे, और अब भी समझतें हैं और इनकी रक्षा में अन्न भी मंहगा नहीं होता, क्योंकि दूध आदि के अधिक होने से दरिद्र को भी खान–पान में मिलने पर न्यून ही अन्न खाया जाता है, और अन्न के कम खाने से मल भी कम होता है। मल के न्यून होने से दुर्गन्ध भी न्यून होती है, दुर्गन्ध के स्वल्प होने से वायु और वृष्टिजल की शुद्धि भी विशेष होती है, उससे रोगों की न्यूनता होने से सबको सुख बढ़ता है।

इससे यह ठीक है कि गौ आदि पशुओं के नाश होने से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाता है, क्योंकि जब पशु न्यून होते हैं तब दूध आदि पदार्थ और खेती आदि कार्यों की भी घटती होती है। देखो! इसी से जितने मूल्य से जितना दूध और घी आदि पदार्थ तथा बैल आदि पशु 700 वर्ष के पूर्व मिलते थे, उतना दूध, घी और बैल आदि पशु इस समय दशगुणे मूल्य में भी नहीं मिल सकते। क्योंकि 700 वर्ष के पीछे इस देश में गवादि पशुओं को मारने वाले मांसाहारी विदेशी मनुष्य बहुत आ बसे हैं। वे उन सर्वोपकारी पशुओं के हाड़माँस तक भी नहीं छोड़ते, तो 'नष्टे मूले नैव पत्रं न पुष्पम्' जब कारण का नाश कर दे, तो कार्य नष्ट क्यों न हो जावें?हे मांसाहारियों! तुम लोग जब कुछ काल के पश्चात् पशु न मिलेंगे, तब मनुष्यों का मांस भी छोड़ोगे वा नहीं?हे परमेश्वर! तू क्यों इन पशुओं पर, जो कि बिना अपराध मारे जाते हैं, दया नहीं करता है?क्या उन पर तेरी प्रीति नहीं है?क्या उनके लिये तेरी न्याय सभा बंद हो गई है?क्यों उनकी पीड़ा छुड़ाने पर ध्यान नहीं देता और उनकी पुकार नहीं सुनता?क्यों इन मांसाहारियों के आत्माओं में दया प्रकाश कर निष्ठुरता, कठोरता, स्वार्थपन और मूर्खता आदि दोषों को दूर नहीं करता?जिससे ये इन बुरे कर्मों से बचें।

– गो करुणानिधि से साभार

क्या खुद लिखना चाहेंगे अपनी तकदीर

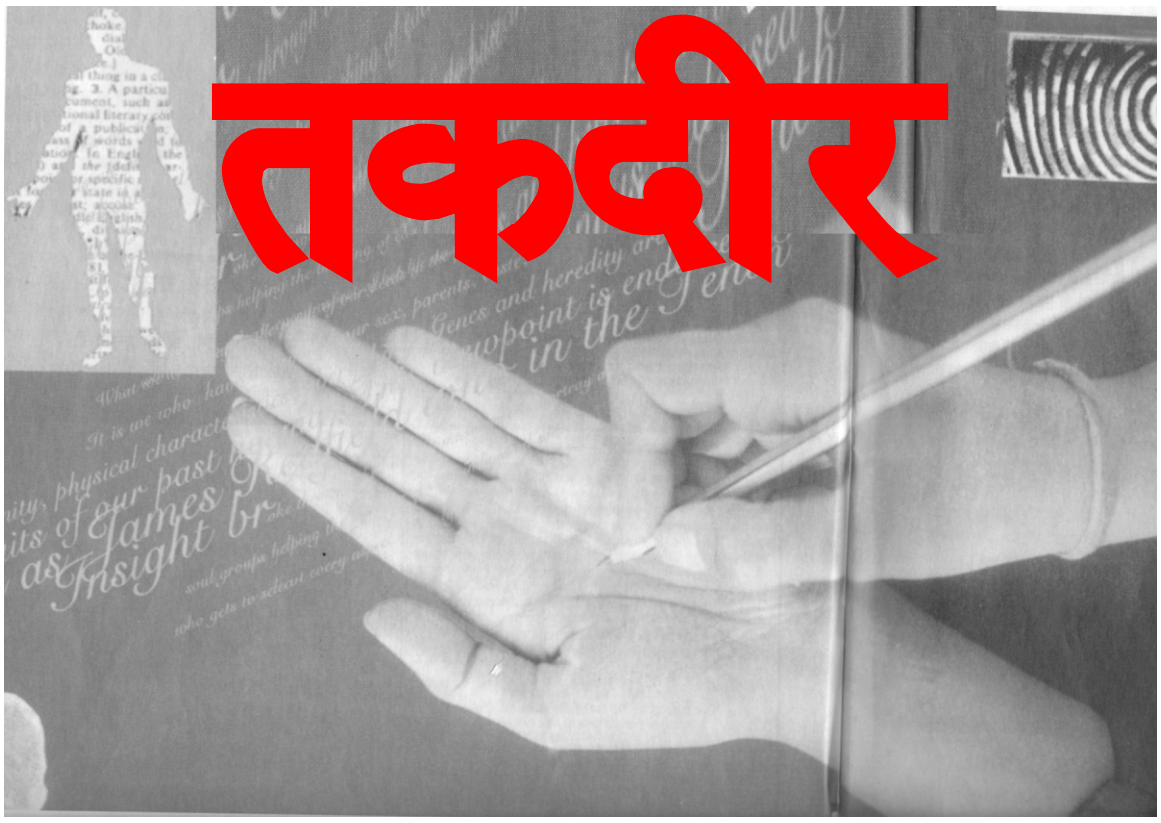

सबको अपनी तरह से जीने की आजादी होती है और इस बारे में कोई भी निर्णय करने की क्षमता भी। पर अक्सर ऐसा हो नहीं पाता, क्योंकि हमारे जीवन की पटकथा पहले से लिखी गई होती है। जीवन एक रचना है, लेकिन क्या हमें सिर्फ वही भूमिका निभानी है, जो हमारे लिए पहले से ही लिखी गई है। **सुमा वर्गीज** का यह लेख एक सवाल छोड़ जाता है कि हम खुद को भाग्य के सहारे छोड़ दें या अपने जीवन के पन्नों को खुद लिखें?

कौन लिखता है हमारा नसीब?कौन फैसला कर रहा है हमारे जीवन का?आखिर वह कौन है, जो हमारे जीवन की पटकथा लिखता है?क्या हम अपनी नियति के पूरी तरह अधीनहैं?क्या हम भाग्य को बदल सकते हैं?जीवन को संवारने की अपनी आजादी के होने या न होने के बारे में दो विचारधाराएँ प्रचलित हैं।

छंगोग्य उपनिषद् के अनुसार आत्मा आस्था का अभिन्न हिस्सा है और इसी आधार पर कह सकते हैं कि हम ईश्वर के ही रूप हैं। हम उस परम व असीम में व्याप्त हैं, जिसमें जीवन की आजादी और बंधन के प्रश्न एक दूसरे में घुलमिल कर औचित्य खो बैठते हैं।

आजकल व्यक्ति की निर्णय क्षमता को अधिक महत्त्व दिया जाता है। माना जाता है कि जीवन को बदलने की आजादी हर व्यक्ति को मिलती है। मनुष्य अपने भीतर की अपार क्षमता से समाज में अच्छी प्रतिष्ठा पाता है। शोपेन्हर से लेकर केंट तक कई दार्शनिकों ने इस विषय पर काफी सोचा है कि मनुष्य अपना व्यक्तित्व विकास करने में स्वतः सक्षम है।

मनोविज्ञान की सक्रियता के साथ मन की गूढ़ता भी उजागर होने लगती है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक सिग्मंड फ्रायड अंदर छिपी इच्छाओं को ही जीवन का दिशा–निर्देशक मानते हैं। उनका कहना है कि इच्छाएँ और उन पर मनुष्य का नियंत्रण दोनों मिलकर जीवनक्रम निर्धारित करते हैं। इस बारे में युंग व मासलोव का दृष्टिकोण सकारात्मक व मानवीय है। उन्होंने मन के साथ आत्मा का भी एक स्थान स्वीकारा है।

एरिक बर्ने ने जींस, माता–पिता की पृष्ठभूमि और वाह्य परिस्थितियों को जीवन निर्धारक माना है। उनके अनुसार माता–पिता द्वारा प्राप्त आनुवंशिकता एक प्रकार की प्रोग्रामिंग है, जिससे जीवन चक्र चलता है। अपनी मूलभूत आवश्यकताओं का निर्वाह करते हुए मनुष्य अपनी आवश्यकताओं का स्तर इतना ऊपर उठा लेता है कि यही बातें बाद में उसके भाग्य को निर्धारित करती है।

अपने जीवनक्रम पर हमारा कितना नियंत्रण है तथा हम इसमें कितना परिवर्तन ला सकते हैं?इन प्रश्नों का समाधान ही जीवन संवारने की आजादी तथा प्रारब्ध के अधीन रहने जैसी संकल्पनाओं की गुत्थी सुलझा सकता है।

जीवन के वैश्विक रूप पर गौर करें तो मनुष्य के जीने की आजादी और प्रारब्ध दोनों अपने आप में सत्य हैं। यदि कोई कहे कि उसका अपने जीवनक्रम पर नियंत्रण नहीं है और उसका जीवन पूरी तरह भाग्य संचालित है तो यह गलत नहीं होगा। इसके उलट धारणा यह है कि मनुष्य में अपने जीवन चरित्र को बदलने की क्षमता व आजादी होती है। यदि अद्वैत की सच्चाई को स्वीकार कर पूरी सृष्टि को एकात्मिक जीवन के रूप में देखकर उसमें लीन हो जायें, तो यह भी जीवन की एक वास्तविकता ही होगी। ईसा मसीह से लेकर गौतम बुद्ध तक सभी ने जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि पर ही बल दिया है। निष्कर्ष यही है कि मनुष्य भाग्य के दायरे में रहकर अपना जीवन संवारने को आजाद है। मानव की इस

किस माता–पिता के घर हमारा जन्म होगा और शरीर का रंग–रूप कैसा होगा, यह नियति तय करती है। परन्तु बाद का सारा जीवन तो खुद पर ही निर्भर होता है।

असीम व्यापकता में कई तरह के खांचे या पैटर्न्स उभर कर सामने आते हैं और यदि इन्हें पूरी तरह से समझ लिया जाये तो यह बताया जा सकता है कि मनुष्य किस पैटर्न के तहत जियेगा। आइये इसे हम एक उदाहरण के जरिये समझें –

अंक एक–दृश्य एक

एक बच्ची पैदा हुई, जिसका नाम लक्ष्मी रखा गया। उसके माता–पिता कर्नाटकी क्षत्रिय हिन्दू समुदाय के हैं। पिता इंजीनियरिंग कम्पनी में मैनेजर और माँ आम गृहिणी। लक्ष्मी का बड़ा भाई है हरि। चमकीली आँखों वाली और गोलमटोल घुंघराले बालों वाली लक्ष्मी बहुत अच्छी दिखती है।

लक्ष्मी जिस घर और परिस्थिति में पैदा हुई, उसे किसने निश्चित किया था?किसने तय किया कि उसकी काया और रूप कैसा होगा?जीवन की इस सच्चाई का उत्तर ढूढ़ना असंभव ही है। हम विवश होकर कह ही देते हैं – यह सब तो भगवान की देन है।

परन्तु जब जीवन को किसी व्यक्ति तक सीमित न रखकर पूरी मानव जाति के जीवन क्रम के श्रेणी में देखा जाता है तो लगता है कि हर व्यक्ति एक पूर्व निर्धारित अवस्था से बंधा है। इसी बंधन में वह अपनी नियति के अनुसार कर्म करता है। कहने का मतलब कि हमारा आज हमारे बीते कल का प्रतिफल है। हमारे वर्तमान के माता–पिता, जाति, समुदाय, शारीरिक विशेषताएं आदि सब कुछ पूर्व निर्धारित होते हैं। जेम्स रेडफिल्ड जैसे नये जमाने के लेखक उपरोक्त विचारों का समर्थन करते हैं। इस तरह के लेखकों ने मनुष्य के जन्मकाल से परे जाकर आत्माओं के समूह का एक विचार प्रतिपादित किया, जिसमें कहा गया कि हर आत्मा अपनी विशिष्ट जीवन विशेषताओं व परिस्थितियों में जन्म लेती हैं।

अंक एक–दृश्य दो

जैसे–जैसे लक्ष्मी बड़ी होती जाती है, उसके जीवन की आजादी का समय विस्तारित होता जाता है। अब वह स्वयं निर्णय कर लेती है कि उसे क्या खाना है, कब सोना है, किससे दोस्ती करनी है, कितने रुपये खर्च करने हैं आदि। यहाँ तक कि वह स्वयं ही यह तय करती है कि उसकी मान्यताएँ और आस्थाएँ किससे जुड़ी होंगी। हाँ, इन बातों में माता–पिता से मिले गुणों का प्रभाव तो साफ झलकता ही है। बर्ने कहते हैं कि इसे दुर्भाग्य कहें या सौभाग्य, मनुष्य के जीवन में बचपन का वह काल अपरिहार्य है, जब उसका दिमाग, ज्ञान, विचार सब कुछ उसके माता–पिता द्वारा रचा जाता है। वह माता–पिता द्वारा दिए संस्कारों में ढल जाता है। इस विचार में यह भी साफ है कि भले ही लक्ष्मी कम्प्यूटर इंजीनियरिंग का कैरियर स्वयं चुन रही हो, लेकिन उसके इस स्वतंत्र दिखने वाले चयन पर माता–पिता के संस्कारों का प्रभाव हुआ ही होगा। हालांकि यह चयन उस समय की परिस्थितियों पर भी हुआ होगा। सारांश में, अपने निर्णय खुद लेती लक्ष्मी को यह पता नहीं रहता कि उसकी आजादी भी उसकी पृष्ठभूमि से बंधी हुई है। फिर भी उसके जीवन की सफलताओं का श्रेय उसे ही देते हैं। लक्ष्मी सुंदर है, बुद्धिमान है, वह टेनिस खेलने में भी निपुण है। शांत एवं कम बोलने वाली इस लड़की से यदि आप पूछें कि तुम्हारे जीवन को कौन बना रहा है?तो वह जवाब नहीं दे पायेगी, क्योंकि शायद ही कभी इन बातों पर उसने गंभीरता से सोचा होगा या सोचने की जरूरत महसूस की होगी। चूंकि उसके जीवन में घटनाएं उसके सोचे अनुसार घटती रही हैं, उसे कभी भी परिस्थिति का सामना नहीं करना पड़ा, इसलिए वह तो अपनी कोशिश और फैसलों को ही इसके लिए जिम्मेदार समझेगी।

फिल्म अभिनेत्री लारा दत्ता अपनी कोशिश एवं फैसलों को ही अपनी जीत के लिए जिम्मेदार मानती हैं। परन्तु एक छोटी कम्पनी में लेखपाल अनुज शुक्ला (बदला हुआ नाम) मानते हैं कि परिस्थितियों ने उन्हें हरा दिया, वे अपने सपने पूरे नहीं कर पाए। उनका अनुभव कहता है कि आपके हाथों में कुछ नहीं, जिंदगी जैसा चाहती है वैसा मोड़ लेती है। लेखक भारत सवूर के विचार कुछ अलग हैं, वे कहते हैं कि किस माता–पिता के घर जन्म होगा और कैसा शरीर या रूप होगा यह अपने हाथ में नहीं, यह नियति तय करती है। परन्तु बाद का सारा जीवन तो खुद पर ही निर्भर है, उस पर किसी भी पूर्व नियति का अधिकार नहीं। अपने तर्क के समर्थन में वे बताते हैं कि उन्हें और उनकी पत्नी को अचानक पत्रकारिता छोड़नी पड़ी। सामने अनिश्चय का अंधेरा था, फिर भी दोनों ने कोशिश की और अपने जीवन को संवारा।

हृदय रोग से पीड़ित पारुल गुलराजानी अपने जीवन

क्या खुद लिखना चाहेंगे अपनी.....

जो लोग अपने जीवन में सफल हैं, उनका परिस्थितियों पर बेहतर नियंत्रण होता है, लेकिन कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो केवल भाग्य, प्रारब्ध जैसी धारणाओं में ही उलझे रहते हैं।

से निराश हो चुकी हैं, वहीं चैनल वी के वीजे पूरब कोहली कहते हैं कि चाहें तो आप जीवन बदल सकते हैं। इस प्रकार दो तरह के दृष्टिकोण सामने आते हैं – एक दृष्टिकोण विजयी लोगों का है और दूसरा उनका जो अपने को विवश एवं पराजित महसूस करते हैं।

'सीड्स ऑफ ग्रेटनेस' पुस्तक के लेखक डेनिस विटले अपने विश्लेषण में दो तरह की मानसिक स्थितियों का जिक्र करते हैं। कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय मे हुए एक शोध का उदाहरण देते हुए विटले लिखते हैं कि समाज में कुछ लोग खुशमिजाज होते हैं। ये ऐसे लोग हैं जो एक अच्छे सामंजस्य के साथ अपनी वर्तमान जिंदगी जी रहे हैं। ऐसे लोगों का अपनी जीवन परिस्थितियों पर बेहतर नियंत्रण होता है। वे अपनी पुरानी गलतियों से सबक लेकर अपना जीवन सुधारते हैं। ऐसे लोग हर नए वर्तमान क्षण में जीते हैं। परन्तु ठीक इसके विपरीत ऐसे भी लोग हैं, जो हमेशा अपने भाग्य, प्रारब्ध, बुरे समय, बुरे स्थान जैसी धारणाओं में उलझे रहते हैं।

निष्कर्ष :– जब तक जीवन सामान्य ढंग से चलता रहता है, तब तक कोशिश, फैसले तथा नियति के बीच एक सीधा–सादा रिश्ता बना रहता है। अगर आप स्थितियों पर विजय पाते जाते हैं तो आप की प्रवृत्ति अपने प्रयत्नों एवं फैसलों को अधिक महत्त्व देने की बनती जाती है। अगर ऐसा नहीं होता है, तो सारा दोष आप अपने भाग्य या नियति को देने लगते हैं। इस स्थिति में आप मान कर चलते हैं कि भाग्य पर आपका नियंत्रण नहीं है, उसे कोई दूसरा संचालित कर रहा है।

अंक दो

लक्ष्मी अब 23 साल की है। वह एक कम्प्यूटर फर्म में काम कर रही है। हालांकि अपने काम से वह संतुष्ट है। उसका आनंद उठा रही है, फिर भी उसे किसी बात की कमी महसूस होने लगी है। यह कमी किस बात की और कैसी है, यह तो कहना कठिन है। उसके ख्याल में अब तरक्की, शादी, परिवार ये बातें सामान्य तौर पर होंगी ही। उसकी महत्त्वाकांक्षा उसे और ऊँची तथा सुनहरी संभावनाएँ तलाशने को उकसा रही है। उसके ऊँचे सपने उसे अब तरसाने लगे हैं। अपने भीतर उभर रहे प्रश्नों के उत्तर पाने के ख्याल से वह व्यक्तित्व विकास की एक कार्यशाला में जाती है, जहाँ उसे जीवन के बारे में समझाया जाता है कि जीवन किस तरह गतिशील एवं सक्रिय है। वहाँ जाकर उसे जीवन का यह सत्य समझ में आया कि मनुष्य के अनुभव उसके जीवन सम्बन्धी दृष्टिकोण के ही प्रतिबिंब होते हैं। जीवन के बारे में जैसा सोचा जाता है वैसा ही अनुभव जीवन से आता है। अगर लोगों का जीवन के प्रति दृष्टिकोण अच्छा हो तो आसपास के लोग तथा परिस्थिति अच्छी प्रतीत होगी। अगर दृष्टिकोण बुरा होगा तो अनुभव भी बुरा ही होगा। मतलब यह है कि जीवन सम्बन्धी वास्तविकताओं पर नियंत्रण करने की मनुष्य में पूरी क्षमता है।

अपनी पुस्तक 'चैनल फॉर सेथ' में लेखक जेन राबर्ट्स कहते हैं कि हम स्वयं जैसे हैं उसी रूप में दुनिया को देखते हैं। अपने विचार, भावना एवं अपेक्षाओं का प्रकाश हम दुनिया पर फेंकते हैं और उसी प्रकाश में प्रकाशित अपने अनुभव को दुनिया की वास्तविकता के रूप में स्वीकार करते हैं।

हम स्वयं जैसे हैं, उसी रूप में दुनिया को देखते हैं। जीवन एक गतिशील प्रक्रिया है, जिसमें विकास की संभावना हमेशा बनी रहती है।

लक्ष्मी ने कार्यशाला में जीवन सम्बन्धी इस सत्य को समझकर अपनाया है। अपनी इस समझ शक्ति के कारण वह जो भी घटता है, मिलता है, उसे बिना किसी पूर्वाग्रह या दूषित भावना के देखती है। ऐसा सकारात्मक दृष्टिकोण जीवन विकास में सहायक होता है। जैसा कि उसने समझा है, जीवन का मतलब जीवन की अनियंत्रित परिस्थिति को मात्र धैर्य एवं उदासीनता से निहारना या बर्दाश्त करना नहीं है, बल्कि जीवन एक गतिशील प्रक्रिया है, जिसमें विकास की संभावना सतत् बनी हुई है।

उसने अपनी भूल पहचान ली। पहले वह उन लोगों एवं परिस्थितियों को देखकर झल्लाती थी, विचलित हो जाया करती थी, जो उसे परेशान करते थे। अब उसने अपनी इन प्रतिक्रियाओं पर विजय पा ली है। वह समझ गई है कि ये प्रतिक्रियाएँ स्वयं से घटने वाली या अनियंत्रित नहीं होती, बल्कि इस पर मनुष्य का नियंत्रण संभव है। हर बार जब वह इन प्रतिक्रियाओं से उबरती, अपने में सकारात्मक परिवर्तन हुआ पाती। अपने अंतस्थ में वह एक शक्ति, स्वीकार्य भाव एवं अंतर्दृष्टि के विकास का अनुभव करती।

अब जैसे ही लक्ष्मी का ध्यान मन से परे अंतस्थ की गहराई में केन्द्रित होने लगा है, उसे जीवन में दिव्य आनन्द की अनुभूति होने लगी है। अब वह बहुत ही आत्मविश्वास के साथ लोगों से बर्ताव करती है। हर प्रसंग का निर्वाह वह अब सहज, सरल एवं लचीलेपन के साथ कर रही है। उसका जीवन भाग्य दुर्भाग्य की संकल्पना से दूर स्वयं की क्षमता पर निर्भर हो चला है।

'व्हाट टू से वेन यू टाक टू यूअरसेल्फ' पुस्तक के लेखक रौड हेल्मस्टेटर कहते हैं कि मनुष्य को अपनी समस्याओं का समाधान खुद ही करना पड़ता है। आध्यात्मिक प्रशिक्षण देने वाली रोहिणी गुप्ता कहती हैं कि भले ही प्रारब्ध आपके लिए एक पूर्व निश्चित योजना बनाता हो, परन्तु आप में इसे बदलने की पूरी क्षमता है। यह बात लगातार मन में लाएं कि मैं अब नियति की विवशता से मुक्त हो चुका हूँ और अपनी कोशिशों के सहारे कुछ भी कर पाने की स्थिति में हूँ। सलाहकार मित्रु बसु के अनुसार जीवन का अच्छा होना मन के अच्छे होने का लक्षण है। यह बात जब आप पूरी तरह जान जाते हैं तो आपमें जीवन को सुधारने की क्षमता अपने आप आ जाती है। आध्यात्मिक गुरु अरुणेश्वर नियति की गुत्थी को सुलझाते हुए कहते हैं कि सभी के पास नियति से निकल पाने की क्षमता तो समान होती है, लेकिन संभावना अलग–अलग। वे कहते हैं कि यह सात्विक प्रवृत्ति के लोगों के पास 80 प्रतिशत, राजसी के पास 50 प्रतिशत तथा तामसी प्रवृत्ति वाले व्यक्ति के पास मात्र 20 प्रतिशत होती है।

निष्कर्ष :– अब तक की चर्चा हमें इस निष्कर्ष पर ले जाती हैं कि मनुष्य अपना जीवन अपनी इच्छानुसार सुधारने या बनाने की पूर्ण क्षमता रखता है। मन और आत्मा की क्षमता के आगे नियति की बाध्यता फीकी पड़ जाती है। भीतर एक मुक्तता का अनुभव होने लगता है। लगता है जीवन पूर्णतः स्वयं के अधीन है, नियंत्रण में है।

अंतस्थ की क्षमता को कैसे जानें?

1.किसी शांत कमरे में बैठें, जहाँ कोई व्यवधान न हो।

2. मन तथा शरीर को शांत रखें। एक सौ तक उलटी या सीधी गिनती करें। सांस पर ध्यान केन्द्रित करें। ये कुछ ऐसे उपाय हैं, जिनसे मन व शरीर को शांत किया जा सकता है।

3. शरीर व मन पूरी तरह शांत हो जाने पर अपने मन की अर्धचेतनावस्था को सुझाव तथा संदेश देना शुरू कर दें। ऐसा करते समय कुछ नियमों का पालन करें जैसे –

(अ) अपने सुझाव या संदेश के वक्तव्य वर्तमान काल में रखें। उदाहरणार्थ यदि स्मरण शक्ति बढ़ानी हो तो कहें कि मेरी स्मरण शक्ति अच्छी है।

(ब) वक्तव्यों को सकारात्मक रूप में रचें। मेरी स्मरण शक्ति अच्छी है, यह सकारात्मक वाक्य है। मेरी स्मरण शक्ति खराब नहीं है, इस तरह के नकारात्मक वाक्यों का प्रयोग करने से परिणाम विपरीत हो सकते हैं।

(स) अपनी बीती बातों कि क्या देखा, क्या सुना एवं क्या पढ़ा?का स्मरण बहुत ही स्पष्ट शब्दों में करें। अपनी याददाश्त पर जोर दें।

(द) किसी भी प्रकार के उपचार से होने वाली परेशानियों जैसे साइड इफैक्ट से बचें। कुछ लोग वजन कम करने के लिए कुछ भी करने को उतावले रहते हैं और फालतू की परेशानियाँ मोल ले लेते हैं।

4. आपकी अर्धचेतनावस्था आपके सुझावों–संदेशों पर अमल करती है। अतः आपके सुझाव आत्मविश्वास से एवं निश्चय से भरे होने चाहिए।

5. आप जो पाना चाहते हैं, उसकी तस्वीर आंखों में लाते रहें। कल्पना कीजिए कि आप वह सब पा रहे हैं, जो आपने सोचा है। ये कल्पनाएँ ही सपनों को हकीकत में लाने की बहुत बड़ी शक्ति है।

6. अपने सोचे हुए काम को कल्पना में लाने का अभ्यास दिन में एक बार जरूर करें। इससे सफलता जल्द हासिल होगी।

शेष अगले अंक में

ये कैसी सरकार?

माँगी थी शराबबंदी, मिला ठेका

हिसार : चिड़ौद गाँव के लोग, पंचायत और सरपंच गाँव में शराबबंदी चाहते हैं लेकिन प्रशासन ने बार–बार आग्रह के बावजूद गाँव में फिर से शराब का ठेका आंबटित कर दिया। हालात ये है कि इस बारे में ग्रामीणों ने प्रदेश के मुख्यमंत्री आबकारी एवं कराधान मंत्री हिसार लोकसभा के संसद कुलदीप बिश्नोई, नलवा से विधायक प्रो. संपत सिंह सहित प्रशासनिक अधिकारियों को अपनी इस माँग को ज्ञापन दे चुके हैं। स्थिति यह है कि ग्रामीण और क्षेत्र के सामाजिक संगठनों का पिछले 16 महीने से चल रहा संघर्ष नाकाम हुआ और अधिकारियों ने गाँव में वर्ष 2013–14 के लिए भी ठेका दे दिया। गाँव के लोग प्रशासनिक अधिकारियों से अपने को ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं।

क्षेत्र के लोग गाँव में शराब का ठेका खुलने से परेशान है। गाँव की पंचायत के साथ आजाद भगत सिंह युवा क्लब, समस्त युवा शक्ति सहित विभिन्न संगठनों ने भी गाँव में शराब के ठेके खुलने पर एतराज किया था। उन्होंने कहा कि गाँव में शराब का ठेका होने से क्षेत्र में असामाजिकता फैलने के साथ महिलाएँ भी अपने को असुरक्षित महसूस करती हैं। गाँव से शहर में पढ़ाई के लिए जाने वाली युवतियों के गाँव लौटते वक्त उन्हें फब्तियाँ सुननी पड़ती है। शराब के ठेके पर बैठक शराब पीने वाले लोग राहगीरों के साथ झगड़े पर उतर आते हैं।

उन्होंने कहा कि इस संदर्भ में गाँव के लोग गत वर्ष आबकारी एवं कराधान अधिकारी से मिले थे और उन्होंने आश्वस्त किया था कि अगले वर्ष गाँव में ठेका नहीं छोड़ा जायेगा। लोगों का आरोप है कि इसके बावजूद भी गाँव में शराब का ठेका छोड़कर प्रशासन ने गाँव में असामाजिकता को कम करने की बजाय बढ़ाने की ओर कदम बढ़ाया है।

बड़ी अदालतों में हिन्दी के प्रयोग पर जोर

नई दिल्ली (एजेंसी)। टेलीविजन के माध्यम से देश के अधिकांश घरों में हिन्दी के प्रवेश के बावजूद उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों के कामकाज में हिन्दी प्रयोग की भाषा नहीं बन सकी है। विधि आयोग के इनकार के बाद वकीलों के संगठनों और स्वयंसेवी संस्थाओं ने इस दिशा में आंदोलन एवं हस्ताक्षर अभियान शुरू किया है।

उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों में हिन्दी के प्रयोग की अनुमति नहीं होने और अंग्रेजी को प्रोत्साहित करने के खिलाफ वकीलों के संगठन ने हस्ताक्षर अभियान शुरू किया है, जबकि स्वयंसेवी संस्थाओं ने इस उद्देश्य के लिए संविधान संशोधन करने के पक्ष में सहमति बनाने के लिए एक ज्ञापन तैयार किया है। इस पर सांसदों के हस्ताक्षर लेने के बाद इसे प्रधानमंत्री को सौंपा जाएगा।

आईआईटी स्नातक तथा 'न्याय एवं विकास अभियान' के संयोजक श्याम रुद्र पाठक ने एजेंसी से कहा कि भारत में अंग्रेजी बोलने और समझने वाले केवल 3 प्रतिशत लोग हैं, लेकिन देश की शीर्ष अदालत और उच्च न्यायालयों में हिन्दी के प्रयोग की अनुमति नहीं है। गौरतलब है कि संविधान के अनुच्छेद 348 (1) के तहत उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालय में सभी कार्यवाही

विधि आयोग के इनकार के बाद वकीलों के संगठनों व स्वयंसेवी संस्थाओं ने इस दिशा में शुरू किया आंदोलन एवं हस्ताक्षर अभियान

अंग्रेजी में होगी। वहीं राजभाषा पर गठित एक समिति ने 28 नवम्बर, 1958 को अनुशंसा की थी कि उच्चतम न्यायालय में कार्यवाही में हिन्दी को प्रयोग की भाषा बनाना चाहिए। संगठन ने इस बारे में संसद भवन परिसर में सांसदों से मुलाकात की और यह विषय उनके समक्ष रखा। न्याय एवं विकास अभियान इस विषय पर दो महीने से अधिक समय से प्रतिदिन कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी के आवास के समक्ष सांकेतिक प्रदर्शन का आयोजन करता है। दूसरी ओर, अखिल भारतीय अधिवक्ता संघ (एआईएलयू) ने इसके पक्ष में हस्ताक्षर अभियान चलाया है। एनआईएलयू के अशोक अग्रवाल ने कहा कि देश की अदालतों में बड़ी संख्या में मामले लंबित हैं। इसका एक प्रमुख कारण वाद का अंग्रेजी भाषा में ठीक ढंग से दर्ज नहीं किया जाना भी है। उच्चतम न्यायालय एवं उच्च न्यायालयों में हिन्दी को प्रयोग की भाषा बनाए जाने के पक्षकारों का कहना है कि आज संसद में हिन्दी का उपयोग हो रहा है। कानून का प्रारूप हिन्दी में तैयार हो रहा है। विभिन्न मंत्रालय, आयोग और कार्यालय राजभाषा अधिनियम के प्रावधानों के तहत हिन्दी में काम कर रहे हैं। संविधान के अनुच्छेद 348 में प्रावधान है कि जब तक संसद विधि द्वारा उपबंध नहीं करे तब तक उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों में सभी कार्यवाही अंग्रेजी भाषा में होगी।

जहां नहीं होता कभी विश्राम || ओ३म् || आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत)

के तत्वावधान में

युवा शक्ति को चरित्रवान, देशभक्त, ईश्वर भक्त, संस्कारवान बनाने का अभियान

बलमुपास्व

1. राष्ट्रीय युवक चरित्र निर्माण शिविर
शनिवार 8 जून से रविवार 16 जून 2013 तक
स्थान : ऐमिटी विश्वविद्यालय, सैक्टर-125, नोएडा, उ0प्र0
सम्पर्क : श्री संतोष शास्त्री - 9868754140, श्री प्रवीन आर्य - 9911404423

2. दिल्ली आर्य कन्या शिविर
दिनांक 19 मई से 26 मई 2013 तक.
स्थान : आर्य समाज, सन्देश विहार, पीतमपुरा, दिल्ली
सम्पर्क - प्रभा सेठी 9871601122 व सीमा कपूर-27354841
उर्मिला - 9968044746

3. हापुड़ आर्य कन्या शिविर
दिनांक 26 मई से 2 जून 2013 तक
स्थान : आर्य इन्टर कालेज, हापुड़,उ.प्र.
सम्पर्क: श्री आनन्दप्रकाश आर्य-09837086799

4. राजस्थान युवक निर्माण शिविर
दिनांक 2 जून से 9 जून 2013 तक
स्थान : डी0 वी0 एम0 पब्लिक स्कूल नारनौल रोड बहरोड, जिला अलवर, राजस्थान
सम्पर्क : श्री रामकृष्ण शास्त्री, फोन : 09461405709

5. फरीदाबाद युवक निर्माण शिविर
दिनांक 2 जून से 9 जून 2013 तक
स्थान : विशाल पब्लिक स्कूल,एस.जी.एम.नगर, फरीदाबाद (हरियाणा)
सम्पर्क : श्री वेदप्रकाश शास्त्री, फोन : 09818045919
श्री मनोज सुमन, फोन : 9810064899

6. पलवल युवक निर्माण शिविर
दिनांक 10 जून से 16 जून 2013 तक
स्थान : डी.ए.वी.स्कूल, श्रद्धानन्द नगर, पलवल (हरियाणा)
सम्पर्क : स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, फोन : 9416267482

7. झारखण्ड आर्य कन्या शिविर
दिनांक 26 मई से 2 जून 2013 तक
स्थान : आर्य समाज, हजारीबाग, झारखण्ड
सम्पर्क :- श्री कृष्ण प्रसाद कौटिल्य
फोन : 09430309525, 08651571706

8. सोनीपत आर्य कन्या शिविर
दिनांक 3 जून से 9 जून 2013 तक
स्थान : जैन विद्या मन्दिर,सोनीपत (हरियाणा)
सम्पर्क : श्री मनोहरलाल चावला, फोन : 09813514699
श्री हरिचन्द स्नेही, फोन : 09416693290

9. पत्निटॉप ध्यान-योग साधना शिविर
दिनांक 19 जून से 23 जून 2013 तक
स्थान : पत्निटॉप, जम्मू-कश्मीर
सम्पर्क : श्री अरूण आर्य, फोन - 09906029549

10. करनाल युवक निर्माण शिविर
दिनांक 19 जून से 23 जून 2013 तक
स्थान : आर्य समाज, प्रेम नगर,करनाल (हरियाणा)
सम्पर्क : श्री स्वतन्त्र कुमार, फोन : 09813041360
श्री हरेन्द्र चौधरी फोन : 09541555000

11. जम्मू युवक चरित्र निर्माण शिविर
दिनांक 24 जून से 30 जून 2013 तक
स्थान : आर्य समाज, जानीपुर, जम्मू
सम्पर्क : श्री सुभाष आर्य, फोन - 09419301915

12. जीन्द युवक चरित्र निर्माण शिविर
दिनांक 5 मई से 12 मई 2013 तक
स्थान : जय भारत हाई स्कूल, रोहतक रोड़, जीन्द
सम्पर्क : श्री योगेन्द्र शास्त्री, फोन : 09416138045

सभी शिविरों के 'समापन समारोह' पर दल बल सहित पहुंचे व तन-मन-धन से सहयोग प्रदान करें।

निवेदक

डा0 अनिल आर्य	यशोवीर आर्य	रामकुमार सिंह	महेन्द्र भाई	धर्मपालआर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
9810117464	9312223472	9868064422	9013137070	9871581398

केन्द्रीय कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली -110007
Email: aryayouth@gmail.com • Website : www.aryayuvakparishad.com

संस्कृता स्त्री पराशक्तिः "ओ३म्" संस्कारवान स्त्री परमशक्ति है

कन्याओं एवं युवतियों के लिए स्वर्णिम अवसर

कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर

दिनांक : 6 जून, 2013 (वीरवार) से 12 जून, 2013 (बुधवार)
स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, गाँव टिटौली, जिला–रोहतक, हरियाणा

पाँच सौ कन्याएँ एवं युवतियाँ भाग लेंगी

शिविर के मुख्य आकर्षण

- राष्ट्रीय भावना, अनुशासन, नैतिक शिक्षा तथा परोपकार की शिक्षा दी जायेगी।
- योगासन, प्राणायाम, जूडो–कराटै आदि शारीरिक एवं आत्मरक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- वैदिक विद्वानों द्वारा संन्ध्या, यज्ञ, आर्य संस्कृति व वैदिक सिद्धान्तों पर व्याख्यान तथा शंका समाधान किया जायेगा।
- चर्चित महिलाओं द्वारा जीवन में सफलता के गुर सिखाए जायेंगे।
- व्यक्तित्व विकास, वक्तृत्व कला एवं आत्म विश्वास के विकास का प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- भोजन की व्यवस्था पूर्णतः निःशुल्क रहेगी।

आवश्यक नियम व निर्देश

- अनुशासन का पालन आवश्यक होगा।
- कोई भी कीमती सामान अपने साथ न लेकर आएं।
- ऋतु अनुकूल बिस्तर, टॉर्च, सफेद सूट व नित्य प्रयोग होने वाला सामान साथ लायें।
- इच्छुक छात्राएँ 100 रुपये प्रवेश शुल्क सहित अपना प्रवेश पत्र अपने माता–पिता/अभिभावक द्वारा अनुमोदित कराकर 30 मई तक अवश्य जमा कराएँ। सीटें सीमित होने के कारण विलम्ब से आने वाले आवेदन स्वीकृत नहीं होंगे।

दानी महानुभावों से अपील

इस सात दिवसीय विशाल शिविर के प्रबन्ध एवं भोजन प्रातः राशन आदि पर लाखों रुपये खर्च होने हैं। आप जैसे दानी महानुभावों के सहयोग से ही इस व्यय की पूर्ति होनी है। अतः आपसे प्रार्थना है कि राष्ट्र निर्माण के इस यज्ञ को सफल बनाने के लिए आप अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग कराएं। आप यदि धनराशि के रूप में योगदान देना चाहते हैं तो समस्त क्रास चैक/बैंक ड्राफ्ट युवा निर्माण अभियान अथवा महिला समता मंच के नाम से भिजवाने की कृपा करें। यदि वस्तु रूप में दान देना चाहें तो आप आटा, दाल, चावल, शुद्ध घी, रिफाइन्ड, दलिया, चीनी, दूध, सब्जी, मसाले आदि सामान भिजवा कर सहयोग कर सकते हैं। आपके द्वारा दिए गए दान से कन्या चरित्र निर्माण रूपी पवित्र यज्ञ सफल होगा तथा आप पुण्य के भागी बनेंगे।

आयोजक

युवा निर्माण अभियान, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् महिला समता मंच एवं स्वामी इन्द्रवेश फाण्उडेशन
कार्यालय – स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, रोहतक (हरियाणा)
सम्पर्क नं. :– 9416630916, 9354840454, 9466430772

अग्निहोत्री धर्मार्थ ट्रस्ट के तत्वावधान में मूर्धन्य आर्य संन्यासी स्वामी दीक्षानन्द जी के दसवें स्मृति दिवस पर

"प्रेरणा दिवस"

दिनांक : 12 मई, 2013 (रविवार) **समय :** सायं 4.00 बजे से 7.15 बजे तक
स्थान : योग निकेतन सभागार, रोड नं.–78, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली–26
सान्निध्य : माननीय श्री बृजमोहन लाल मुन्जाल (अध्यक्ष, हीरो मोटो कार्प)
माननीय डॉ. अशोक कुमार चौहान (संस्थापक, एमिटी शिक्षण संस्थान)
मुख्य वक्ता : आचार्य वागीश जी, (गुरुकुल एटा),डॉ. महेश विद्यालंकार, डॉ. राज बुद्धिराजा
यज्ञ, भवन, प्रवचन, विद्वानों का सम्मान के सुन्दर कार्यक्रम में आप गुरुदेव को श्रद्धांजलि देने सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।
प्रीति भोज : रात्रि 7.15 बजे

दर्शनाभिलाषी

दर्शन अग्निहोत्री	सरोज अग्निहोत्री	डॉ. अनिल आर्य	डॉ. सुनील रहेजा
अध्यक्ष	ट्रस्टी	संयोजक	स्वागताध्यक्ष
9810033799	22523784	9810117464	9718599009

कहाँ ले जायेगी यह दरिंदगी

– गौरीशंकर राजहंस

आजादी से ठीक पहले राष्ट्रकवि 'दिनकर' ने दिल्ली के बारे में एक कविता लिखी थी– वैभव की दीवानी दिल्ली। अनाचार, अपमान, व्यंग्य की चुभती हुई कहानी दिल्ली। दिल्ली के बारे में जो बातें उस समय सच थीं वे आज भी सच हैं, बल्कि सच कहा जाए तो परिस्थितियां अंग्रेजों के समय की तुलना में आज हजार गुना बदतर हो गई हैं। इस मामले में अंग्रेजों का कानून कड़ा था। आज जो कुछ हो रहा है उसे देखकर लगता है कि अपने देश में राक्षसी प्रवृत्ति बहुत तेजी से बढ़ रही है। 16 दिसंबर को हुई दरिंदगी से अपने देश ही नहीं सारे संसार के लोग सकते में आ गए। हाल ही में जर्मनी में पत्रकारों ने प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह से दिल्ली सामूहिक दुष्कर्म कांड के बारे में पूछा था। डोंपते हुए प्रधानमंत्री ने कहा था कि अब ऐसी घटना भारत में नहीं होगी। फास्ट ट्रैक कोर्ट में दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा दिलाने की व्यवस्था की गई है। उसके शीघ्र बाद केंद्र सरकार ने महिलाओं की सुरक्षा के लिए एक अध्यादेश जारी किया जिसे बाद में कानून का रूप संसद में दिया गया। इस बिल में दुष्कर्म करने वाले दोषियों को कठोरतम दंड देने की व्यवस्था है।

उम्मीद थी कि इस बिल के पास हो जाने के बाद अब कोई महिलाओं के संग दुष्कर्म करने की हिम्मत नहीं कर पाएगा। छोटी बच्चियों के साथ दुष्कर्म की घटनाएं तो अकल्पनीय थीं। लगता है कि अब दरिंदों को कानून की कोई परवाह नहीं रह गई है। अन्यथा पांच वर्ष की बच्ची के संग ऐसा वहशी कुकृत्य करने का साहस कोई नहीं कर सकता था। सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि इस दरिंदगी की घटना में पुलिस का रवैया अत्यंत ही शर्मनाक रहा। एक तो पुलिस ने एफआइआर लिखने से मना कर दिया, फिर बच्ची को खोज निकालने में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं थी। जब बच्ची करीब–करीब मरणासन्न अवस्था में पाई गई तो उसे निकटतम अस्पताल ले जाने की पुलिस ने कोई कोशिश नहीं की। यही नहीं, पुलिस ने परिजनों को रिश्वत देकर इस मामले को दबाने का पूरा प्रयास किया। सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि जब अस्पताल में स्कूल और कॉलेज में पढ़ने वाली लड़कियां इस जघन्य अपराध के विरुद्ध प्रदर्शन कर रही थीं तब टीवी कैमरे के सामने दिल्ली पुलिस के एसीपी ने लड़की को थप्पड़ जड़ दिया। इस घटना को सारे देश में लोगों ने देखा और विदेशों में भी। विदेशों में रहने वाले मेरे रिश्तेदारों और दोस्तों ने फोन कर मुझसे पूछा कि आखिर दिल्ली में यह क्या हो रहा है?उन्होंने यह भी कहा कि गुड़िया के साथ हुई दुष्कर्म वाली घटना और पुलिस द्वारा लड़कियों को थप्पड़ जड़ देने की घटना स्थानीय अंग्रेजी टीवी चैनलों पर भी लगातार दिखाई जा रही है। इस खबर को देखकर अमेरिका और कनाडावासी भारत का मजाक उड़ा रहे हैं। वे कह रहे हैं कि भारत के लोग अभी भी जंगली हैं, जो न अपनी महिलाओं को सुरक्षा प्रदान कर पा रहे हैं और न अपनी बच्चियों को। ऐसे में कोई विदेशी महिला सैलानी बनकर अकेले भारत आने का साहस कैसे दिखा सकेगी?इस निंदनीय घटना से विदेशों में रहने वाले हर भारतीय का सिर शर्म से झुक गया है।

संस्कृत में लोकोक्ति है कि जहां नारियों की पूजा होती है वहां देवता बसते हैं। शायद इसी भावना से हर वर्ष नवरात्र में दुर्गा पूजा के समय विशेषकर अष्टमी और नवमी के दिन कन्याओं की पूजा की जाती है। इसी अष्टमी के दिन दरिंदों ने उसके साथ दुष्कर्म किया। सारे भारत में सभ्य समाज में बेटियों को अत्यंत आदर की दृष्टि से देखा जाता है। बंगाल में तो बचपन से ही बेटी को मां कहा जाता है। हमारी सभ्यता शर्मसार हो गई जब एक अबोध बच्ची के साथ इस तरह का दुष्कर्म हुआ।

यह सही है कि अब कानून का डर किसी को नहीं रह गया है। पुलिस भ्रष्ट हो गई है। दुष्कर्म करने वाला सोचता है कि एक तो वह कानून की गिरफ्त में नहीं आएगा और यदि आएगा भी तो पुलिस की मुट्ठी गर्म कर दी जाएगी और मामला रफा–दफा हो जाएगा। पीड़िता के अभिभावकों को डरा धमकाकर पुलिस चुप करा देगी और कहेगी कि इससे उसके परिवार की ही बदनामी होगी। यह सच है कि अधिकतर मामलों में पुलिस के डंडे के डर से पीड़ित गरीब परिवार के लोग चुप होकर बैठ जाते हैं। अब समय आ गया है आत्मनिरीक्षण का। दिल्ली सामूहिक दुष्कर्म के विरोध में विजय चौक और इंडिया गेट पर हजारों युवक–युवतियां कई दिनों तक प्रदर्शन करते रहे और पुलिस के प्रहार बर्दाश्त करते रहे। ठीक उसी तरह के प्रदर्शन इस बार भी हुए हैं। पुलिस मुख्यालय के सामने, गृहमंत्री और प्रधानमंत्री के निवास के सामने। गुड़िया का तो इलाज एम्स में चल रहा है, परंतु ऐसी अनेक गुड़िया हैं जो दरिंदों की हवस का शिकार बनी हैं। चीन में यदि ऐसी घटना हुई होती तो दोषी को चौराहे पर खड़ा करके गोली मार दी गई होती। वहां इस तरह की घटना में न्यायालय में 3–4 दिन में ही फैसला हो जाता है। भारत में चाहे फास्ट ट्रैक कोर्ट ही क्यों नहीं हो, मामला लंबा खिंचता रहता है। किसी गरीब व्यक्ति के पास इतनी आर्थिक ताकत नहीं होती है कि वह लंबे खिंचने वाले मुकदमे का खर्चा वहन कर सके। अंत में वह टूट जाता है और मामला रफा–दफा हो जाता है। पुलिस सुधार की बात सभी करते हैं, परंतु इसमें पहल कोई पार्टी नहीं कर रही है। समय आ गया है जब हम अपने कलेजे पर हाथ रखकर पूछें कि इस तरह की दरिंदगी आखिर अपने देश और समाज को कहां ले जाएगी और क्या इस तरह की शर्मनाक घटनाएं हमें संसार के सभ्य देशों में मुंह दिखाने लायक रखेंगी?

(लेखक पूर्व सांसद एवं पूर्व राजदूत हैं)

पतन का प्रमाण

• आज हमारे आसपास जो कुछ हो रहा है उसे देखकर लगता है कि अपने देश में राक्षसी प्रवृत्ति बहुत तेजी से बढ़ रही है

यह सही है कि अब कानून का डर किसी को नहीं रह गया है। पुलिस भ्रष्ट हो गई है। दुष्कर्म करने वाला सोचता है कि एक तो वह कानून की गिरफ्त में नहीं आएगा और यदि आएगा भी तो पुलिस की मुट्ठी गर्म कर दी जाएगी और मामला रफा–दफा हो जाएगा। पीड़िता के अभिभावकों को डरा धमकाकर पुलिस चुप करा देगी और कहेगी कि इससे उसके परिवार की ही बदनामी होगी। यह सच है कि अधिकतर मामलों में पुलिस के डंडे के डर से पीड़ित गरीब परिवार के लोग चुप होकर बैठ जाते हैं। अब समय आ गया है आत्मनिरीक्षण का। दिल्ली सामूहिक दुष्कर्म के विरोध में विजय चौक और इंडिया गेट पर हजारों युवक–युवतियां कई दिनों तक प्रदर्शन करते रहे और पुलिस के प्रहार बर्दाश्त करते रहे। ठीक उसी तरह के प्रदर्शन इस बार भी हुए हैं। पुलिस मुख्यालय के सामने, गृहमंत्री और प्रधानमंत्री के निवास के सामने। गुड़िया का तो इलाज एम्स में चल रहा है, परंतु ऐसी अनेक गुड़िया हैं जो दरिंदों की हवस का शिकार बनी हैं। चीन में यदि ऐसी घटना हुई होती तो दोषी को चौराहे पर खड़ा करके गोली मार दी गई होती। वहां इस तरह की घटना में न्यायालय में 3–4 दिन में ही फैसला हो जाता है। भारत में चाहे फास्ट ट्रैक कोर्ट ही क्यों नहीं हो, मामला लंबा खिंचता रहता है। किसी गरीब व्यक्ति के पास इतनी आर्थिक ताकत नहीं होती है कि वह लंबे खिंचने वाले मुकदमे का खर्चा वहन कर सके। अंत में वह टूट जाता है और मामला रफा–दफा हो जाता है।

गलती स्वीकारें

दोष हमारे जीवन की स्वाभाविक प्रक्रिया है, किंतु अकसर लोग खुद को दोषी नहीं ठहराते, चाहे उनसे कितनी ही भारी भूल क्यों न हुई हो। भूल को स्वीकार कर लेने में हानि कुछ भी नहीं है। अपना मन निर्मल हो जाता है और वह व्यक्ति आगे के जीवन के लिए जागरूक हो जाता है, किंतु दोष को जब दोष मानकर स्वीकार नहींकिया जाता, तो हमारा दुस्साहस आनंद आने लगता है। छिपायी हुई भूल भी सत्य से विषैला वातावरण नहीं बनता, दोष स्वीकार कर लेने का अर्थ है, सच्चाई आंतरिक विकास में परमोपयोगी गुण है। आगे नहीं बढ़ सकता। सच्चाई आवश्यक तत्व की अनुभूति संभव नहीं है। हम कांपता हैं। चारों ओर से कोई न कोई

हर संकेत पर प्रत्येक इशारे पर यही रहा है, चाहे वहां बात किसी अन्य पुरुष की उद्दीप्त होता है और हमें अपराध करने में ही दूसरे प्रकार के अनर्थो को जन्म देती है। जितना उसे छिपाने से बनता है। अपने के प्रति प्रेम। सच्चाई हमारे वाह्य व अगर सच्चाई न हो तो हमारा एक पग भी भाव है, उसका परित्याग कर देने से आत्म डरे–डरे से रहेंगे। झूठ बोलने में हृदय उंगली ही उठाता जान पड़ता है।

स्पष्ट होता है कि वह कोई अपनी बुराई कर चल रही हो। निर्भीकता सच्चाई में होती है। जब हमें सच बोलने का आभास होगा, तब हम भला किसी की निंदा से क्यों घबराएंगे। संत सुकरात कहा करते थे कि जो अपने आप को व्यक्त कर सकता है, उसे मैं सर्वोपरि साहसी मानता हूँ। मुझे विश्वास हो जाता है कि वह एक दिन जरूर अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा। ऐसा इसलिए क्योंकि अब उसका हृदय साफ हो गया है और परमात्मा को धारण करने की स्थिति बन चुकी है। सद्गुण हमारे जीवन की प्रमुख आवश्यकता है। इससे हमारे सुखों में वृद्धि होती है। समाज में व्यवस्था रहती है और समाज में सर्वत्र सुखद वातावरण विनिर्मित होता है। सद्गुणी मनुष्य अभाव से ग्रस्त नहीं हो सकता। उसे आंतरिक शांति प्राप्त होती है, संतोष मिलता है और वह सहज ही आत्मज्ञान प्राप्त कर लेता है।

– लाजपत राय सभरवाल

NDPSo on 3/4 मई, 2013 वैदिक सार्वदेशिक 02 से 08 मई, 2013 पंजीयन संख्या ***DELMUL/2005/15488***
डाक पंजीकरण संख्या ***DL(c)-01/1213/12-14***
प्रकाशन की तिथि : 2 मई, 2013 ***Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]***

इस साहस का समर्थन करे समाज

– सुनील अमर

खाप पंचायतों की प्रतिगामी हरकतों से त्रस्त देश के नारी समाज में एक स्त्री ने अपने हक के लिए लड़ने की हिम्मत दिखाई है। घर–परिवार और समाज के तमाम एतराज को दरकिनार कर एक फौजी की निःसंतान विधवा ने वीर्य बैंक में रखे अपने पति के वीर्य से गर्भधारण किया है। इस दंपत्ति का एक अस्पताल में संतानोत्पत्ति हेतु इलाज चल रहा था लेकिन फौजी पति को बार–बार छुट्टी नहीं मिल पाने के कारण चिकित्सकों ने उसका वीर्य सुरक्षित रख लिया था। लगभग साढ़े तीन साल पहले पति की मौत हो गई। 35 वर्षीया पत्नी ने न सिर्फ दूसरी शादी करने से इनकार कर दिया बल्कि उसने अपने परिजनों के समक्ष अपनी इच्छा रखी कि वह स्थानीय अस्पताल में रखे अपने पति के वीर्य से गर्भवती होना चाहती है। जैसा कि फौजियों की निःसंतान विधवाओं के साथ अकसर होता है, यहां भी परिजन व समाज इस स्त्री के विरुद्ध हो गए। ताजा स्थिति तक पहुंचने में उत्तर प्रदेश के आगरा जिले की इस साहसी महिला को तीन साल लंबी लड़ाई लड़कर अपने दृढ़ मनोबल का परिचय देना पड़ा और वह इस सामाजिक लड़ाई को जीत गई। हमारे भारतीय समाज की बड़ी विचित्र स्थिति है। हमारे नागर समाज के विरोध का अंतर्विरोध यह है कि वह स्त्री अधिकारों के लिए दिल्ली के जंतर–मंतर पर सरकार के खिलाफ तो खूब प्रदर्शन कर सकता है लेकिन वहां से 20–30 किमी के दायरे में औरतों के खिलाफ जहर उगल रही खाप पंचायतों तक जाने की हिम्मत नहीं करता! ऊपर वर्णित घटना तो ऐसे घटनाक्रमों की एक कड़ी भर है जहां परिवार के लोग अपनी ही विधवा बहू को महज इसलिए मार देते या मरने को विवश कर देते हैं ताकि उसका हिस्सा और उसकी सम्पत्ति को कब्जाया जा सके। सती प्रथा इसी षडयंत्र और कुकर्म का एक हिस्सा रही है। हम प्रायः देखते–सुनते हैं कि देश की रक्षा में शहीद हो जाने वाले सैनिकों की विधवाओं के साथ उनके ही सास–ससुर और जेठ–देवर कैसे न सिर्फ उस स्त्री का पारिवारिक हक बल्कि सरकार द्वारा दी गई सहायता को भी हड़प जाने का कुचक्र करते रहते हैं। कई मामलों में तो ऐसी विधवाओं को अपनी जान से ही हाथ धोना पड़ता है। उपरोक्त मामले में तो वह स्त्री अपने ही पति के वीर्य से कृत्रिम गर्भाधान करके अपने ही सास–ससुर के वंश को आगे बढ़ाना चाहती है, लेकिन यह भी उन सबको अगर कबूल नहीं तो इसका मतलब यही है कि वे अपनी संपत्ति का एक और हिस्सेदार नहीं चाहते!

ऐसी विचारधारा वाले परिवारों में ऐसी स्त्रियों के जीवन को भी खतरे से मुक्त नहीं माना जा सकता। लेकिन ऐसी सोच कम पढ़े–लिखे या अपढ़ लोगों की ही हो, ऐसा नहीं माना जा सकता। समाज के सुशिक्षित तबके का भी कमोबेश यही हाल है। हमारे देश के तथाकथित संत– महात्मा, राजनेता, बड़े नौकरशाह तथा कुछेक न्यायाधीशों के विचार भी उक्त महिला के परिजनों जैसे ही हैं। देश में बलात्कार के बढ़ते अपराधों पर संतों, सामाजिक–सियासी नेताओं के कुविचार हम जान ही चुके हैं कि बलात्कार के मामलों में सारा दोष औरत का ही होता है। हमारी पढ़ाई लिखाई, शिक्षा–दीक्षा और ज्ञान–विज्ञान की सारी तरक्की का हासिल महज यही है कि जिन परिवारों में सिर्फ लड़की ही है वहां भी मां–बाप का अंतिम संस्कार करने का हक उसे नहीं है, भले ही दूर के किसी रिश्तेदार पुरुष से यह करवाया जाए!

गत वर्ष जयपुर उच्च न्यायालय में एक याचिका पर सुनवाई करते हुए मुख्य न्यायाधीश अरुण मिश्र व न्यायाधीश नरेंद्र कुमार जैन की खंडपीठ ने राजस्थान सरकार से पूछा था कि मां–बाप के अंतिम संस्कार बेटियों से कराने की कोई प्रोत्साहन योजना क्यों नहीं बनती। ध्यान रहे कि राजस्थान खास तौर पर सती प्रथा से ग्रस्त राज्य है। असल में तो ऐसी योजनाओं को केंद्र सरकार द्वारा तैयार कर पूरे देश में लागू कराया जाना चाहिए। लेकिन इसके उलट स्त्रियों से संबंधित बहुत से ऐसे मामले हैं जहां अदालतों का रवैया भी हमारे पुरुष समाज की मानसिकता का ही विस्तार होता लगता है। अभी इसी साल की शुरुआत में सर्वोच्च अदालत ने कर्नाटक के एक सत्र न्यायालय के खिलाफ बहुत सख्त टिप्पणी की। एक मामले में पति दहेज के लिए अक्सर अपनी पत्नी को बेरहमी से पीटा करता था जिससे उसकी एक आंख में गंभीर चोट आई और वह हमेशा के लिए खराब हो गई। बाद में पत्नी ने तंग आकर जहर खाकर आत्महत्या कर ली। मुकदमा चलने पर ट्रायल न्यायालय ने मारपीट की घटना को विवाहित जीवन का हिस्सा बताया और सभी तीन अभियुक्तों को बरी कर दिया। जबकि इसी मामले में कर्नाटक उच्च न्यायालय ने महिला के पति को सजा दी। सर्वोच्च न्यायालय में इस मामले की सुनवाई करते न्यायाधीशद्वय आफताब आलम और रंजना प्रकाश देसाई की पीठ ने ट्रायल कोर्ट की कड़े शब्दों में भर्त्सना की और कहा कि किसी महिला की पिटाई या उससे गाली–गलौज उसके आत्मसम्मान पर हमला है और इसे साधारण तौर पर नहीं लिया जा सकता। न्यायाधीशों ने कहा कि अब समय आ गया है कि अदालतें महिलाओं के प्रति किए जा रहे अत्याचारों के प्रति अपना नजरिया बदलें। यहां यह ध्यान देने योग्य तथ्य है कि देश में सिर्फ यौन हिंसा से संबंधित एक लाख से अधिक मामले अदालतों में विचाराधीन हैं। आगरा की इस महिला ने जिस साहस का परिचय दिया है वह एक मिसाल है। एक स्त्री अपने शरीर की उसी तरह मालिक होती है जैसे एक पुरुष। वह अगर अपने दिवंगत पति के बच्चे की मां बनना चाहती है तो इसे किस आधार पर उसका घर और समाज नकार सकता है?कारण साफ है कि अगर वह अपने पति के बच्चे की माँ बन जाएगी तो वह भी पारिवारिक संपत्ति का हिस्सेदार हो जाएगा, लेकिन अगर वह विधवा किसी और से शादी कर ले तो परिवार के लोग उसके हिस्से की संपत्ति के भी स्वामी हो जाएंगे। दुर्भाग्य से समाज के हर तबके में ऐसी सोच के लोग अब भी मौजूद हैं। बहरहाल, इस महिला के साहस का समर्थन किया जाना जरूरी है।

– राष्ट्रीय सहारा 26 अप्रैल, 2013 से साभार

प्रतिष्ठा में:–

अवितरण की दशा में लौटाएँ–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन,
(रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002

आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान तथा शास्त्रज्ञ

आर्य रत्न रमेशचन्द्र शास्त्री जी का निधन

आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वान् एवं शास्त्रज्ञ श्री रमेशचन्द्र शास्त्री जी का 26 अप्रैल, 2013 को रात्रि 8 बजे फरीदाबाद में अपने निवास स्थान में निधन हो गया। अपनी तर्क बुद्धि से अनेक विषयों को शास्त्रार्थ के द्वारा जन–साधारण को समझाने वाले शास्त्री जी अपने निजी अनुभवों एवं ज्ञान गंगा को साथ लेकर संसार से विदा हो गए। उनका सम्पूर्ण जीवन सादगी व परोपकार से ओत–प्रोत था। उनकी चाह सत्य ज्ञान को जन–जन तक पहुँचाने की रही। सिंहसदृश परिश्रमी एवं लक्ष्यभेदी रहते हुए उन्होंने कितने ही आर्य समाज के कार्यों को देश में भ्रमण करते हुए यहाँ से वहाँ तक वितरित किया।

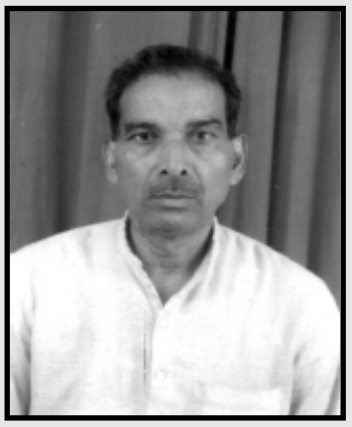

स्वर्गीय श्री रमेशचन्द्र शास्त्री जी को समर्पित

एक और विद्वान उत्कट चल दिया जग छोड़कर।
साथ में ले ज्ञान की झोली सफर के वास्ते।।
क्या पता कल क्या बने, किस रूप में वो फिर मिले।
बन के साथी वो मेरा, खिलखिलाए रास्ते।।
की थी उसने प्रेम से झूठ निन्दा बेधड़क।
कर दिया बलिदान जीवन सत्यता के वास्ते।।
आर्य था वो आर्य करने इस जगत की चाह में।
जाने कितनी मोल ली थी, पापियों की आफतें।।
लक्ष्यभेदी था ज़बर वो तर्क में ऐसा प्रबल।
बात कैसी भी हो लेकिन ढूँढ़ लेता रास्ते।।
कुछ मुलाकातें ही उसकी दे गई पैगाम मुझको।
स्त्र से सब काम कर डालो प्रभु के वास्ते।।

– आर्षपाणि शर्मा वेदालंकार

ऐसे विद्वान जो सदा ज्ञान से पिपासु एवं परार्थी हों उनका समाज में दिखना दुर्लभ हो गया है। अतः यह आज के सामाजिक परिवेश के लिए महती हानि हुई है। ईश्वर उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें एवं उनके परिवार को यह दारुण दुःख सहन करने की शक्ति दें। परिवार उनकी शोकसभा रविवार 5 मई, 2013 को दोपहर 2 से 4 बजे तक रामकृष्ण मंदिर, सैक्टर–19, (184 नं. कोठी के सामने) फरीदाबाद में कर रहा है। आप सब ऐसे विद्वान को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिए अवश्य पधारें।

– आर्षपाणि शर्मा वेदालंकार, स्वतंत्र पत्रकार, मो.:–9999467839

प्रो० कैलाशनाथ सिंह, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा सक्सेना आर्ट प्रिंटर्स : सैड-26 ओखला फेस-1, नई दिल्ली-110020 से प्रकाशित एवं मुद्रित।
(फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216) सम्पा. : प्रो० कैलाशनाथ सिंह (सभा मन्त्री) मो.:0.9415017934
ई-मेल : *Sarvadeshik@yahoo.co.in* **वैबसाइट : *www.vedicaryasamaj.com***

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।